भूत ऽऽऽ कैसे होते हैं? क्या करते हैं?

◆ श्रीराम शर्मा आचार्य

भूत कैसे होते हैं—क्या करते हैं ?

*

लेखक
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

*

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

*

पुनरावृत्ति सन् २०१२ मूल्य : १५.०० रुपये

विषय-सूची

जन्म के पहले जिस प्रकार हम थे, उसी प्रकार मृत्यु भी कोई ऐसी घटना नहीं है, जिससे जीवन का नाश सिद्ध होता हो। नाश शब्द भी जन्म की तरह "नश अदर्शने" धातु से बना है; जिसका अर्थ होता है, जो अभी तक दिखाई दे रहा था, वह अब अव्यक्त हो गया। वह अपनी सूक्ष्म अवस्था में चला गया। शरीर स्थूल था—उसमें प्रविष्ट होने के कारण संरचना दिखाई दे रही थी, चेतना व्यक्त थी—पर शरीर के बाद वह नष्ट हो गई हो ऐसा नहीं है। अब इस तथ्य को विज्ञान भी मानने लगा है, अलबत्ता विज्ञान प्रकट का संबंध अभी तक मनोमय विज्ञान से जोड़ नहीं पाया, इसलिए वह परलोक, पुनर्जन्म, लोकोत्तर जीवन, भूत-प्रेत, देव-योनि, यक्ष-किन्नर, पिशाच, बैताल आदि अतींद्रिय अवस्थाओं का विश्लेषण नहीं कर पाता। पर मृत्यु के बाद जीवन नष्ट नहीं हो जाता है, यह एक अकाट्य तथ्य है और इसी आधारभूत सिद्धांत के कारण भारतीय जीवन पद्धति का निर्धारण इस प्रकार किया गया है कि वह मृत्यु के बाद भी अपने जीवन के अनंत प्रवाह को अपने यथार्थ लक्ष्य स्वर्ग, मुक्ति और ईश्वर दर्शन की ओर मोड़े रह सके।

विक्षुब्ध जीवात्मा की दयनीय स्थिति—प्रेत-दशा

*

जीव चेतना का शरीर मरण के साथ ही अंत नहीं हो जाता। वरन् उसका अस्तित्व पीछे भी बना रहता है। इसके प्रत्यक्ष प्रमाण भी बहुधा मिलते रहते हैं। पिछले दिनों यह तथ्य परंपरागत मान्यताओं एवं कथा-पुराणों के प्रतिपादनों पर ही निर्भर था कि मरणोत्तर काल में भी जीवात्मा का अस्तित्व बना रहता है। उसे परलोक में रहना पड़ता है। स्वर्ग-नरक भुगतना पड़ता है एवं पुनर्जन्म के चक्र में भ्रमण करना पड़ता है।

इस संदर्भ में अब तक के अन्वेषणों ने कई अनोखे तथ्य प्रतिपादित किए हैं। मरने के उपरांत अनेकों को शांति मिलती है और वे प्रत्यक्ष जीवन में अहिर्निश श्रम करने की थकान को दूर करने के लिए परलोक की गुफा में विश्राम लेने लगते हैं। इसी निद्राकाल में स्वर्ग-नरक जैसे स्वप्न दिखाई पड़ते रहते होंगे। थकान उतरने पर जीव पुनः संपन्न बनता है और अपने संगृहीत संस्कारों के खिंचाव से रुचिकर परिस्थितियों के इर्द-गिर्द मँड़राने लगता है। वहीं किसी के घर उसका जन्म हो जाता है।

कभी-कभी कोई मनुष्य प्रेत योनि प्राप्त करते हैं। यह न जीवित स्थिति कही जा सकती है और न पूर्ण मृतक ही। जीवित इसलिए नहीं कि स्थूल शरीर न होने के कारण वे कोई वैसा कर्म तथा उपभोग नहीं कर सकते, जो इंद्रियों की सहायता से ही संभव हो सकते हैं। मृतक उन्हें इसलिए नहीं कह सकते कि वासनाओं और आवेशों से अत्यधिक ग्रसित होने के कारण उनका सूक्ष्म शरीर काम करने लगता है, अस्तु वे अपने अस्तित्व का परिचय यत्र-तत्र देते-फिरते हैं। इस विचित्र स्थिति में पड़े होने के कारण वे किसी का लाभ एवं सहयोग तो कदाचित ही कर सकते हैं; हाँ,

डराने या हानि पहुँचाने का कार्य वे सरलतापूर्वक संपन्न कर सकते हैं। इसी कारण आमतौर से लोग प्रेतों से डरते हैं और उनका अस्तित्व अपने समीप अनुभव करते ही, उन्हें भगाने का प्रयत्न करते हैं। प्रेतों के प्रति किसी का आकर्षण नहीं होता वरन् उससे भयभीत रहते और बचते ही रहते हैं। वैज्ञानिक शोध की दृष्टि से, वस्तुस्थिति जानने एवं कौतूहल निवारण की दृष्टि से कोई उस क्षेत्र में प्रवेश करके, तथ्यों की जानकारी के लिए प्रयत्न करे तो यह दूसरी बात है।

प्रेतात्माओं द्वारा अपने अस्तित्व का परिचय दिये जाने तथा अमुक व्यक्तियों को अपना माध्यम बनाकर त्रास देने की घटनाओं का वर्णन करना, इन पंक्तियों में अभीष्ट नहीं। जनश्रुतियों से लेकर सरकारी रिकार्ड में दर्ज और परामनोविज्ञान के अन्वेषकों द्वारा मान्यता प्राप्त ऐसी असंख्यों घटनाएँ सामने आती रहती हैं, जिनसे प्रेतात्माओं के अस्तित्व की पुष्टि होती है। यहाँ तो चर्चा यह की जानी है कि प्रेत योनि में सभी को जाना पड़ता है अथवा किसी विशेष स्थिति के व्यक्ति ही उनमें प्रवेश करते हैं। उत्तर स्पष्ट है। उद्विग्न, विक्षुब्ध, आतुर, अशांत, क्रुद्ध, कामनाग्रस्त, अतृप्त लोगों को ही प्रायः प्रेत बनना पड़ता है। शांतचित्त, सौम्य एवं सज्जन प्रकृति के लोग सीधी-सादी जन्म-मरण की प्रक्रिया पूरी करते रहते हैं।

प्रेत-योनि की प्राप्ति के दो मुख्य कारण होते हैं—**पहला**—प्रबल आकांक्षाओं की अतृप्ति। **दूसरा**—तृष्णा-वासनाओं की तीव्रता। प्रबल आकांक्षा की व्यक्ति-चित्त में प्रचंड प्रतिक्रिया होती है। दैनिक जीवन में भी यह देखा जाता है कि जब कोई नवीन योजना दिमाग में होती है, तो उनकी सुनिश्चित रूपरेखा बनने तक मन-मस्तिष्क चैन से नहीं बैठ पाता, न ही नींद आती है। ऐसी आकांक्षा खंडित हो जाने पर कई-कई रातों तक लोगों की नींद उड़ जाया करती है। यही बात तृष्णाओं के बारे में है। तृष्णा से व्याकुल लोग न शांत रह पाते, न आराम कर पाते, न ही सो पाते हैं, जब तक तीव्र तृष्णा की कुछ पूर्ति नहीं होती। वे उद्विग्न ही

बने रहते हैं। प्रेत योनि भी ऐसी ही उद्विग्नता और अशांति से भरी जीव-दशा का नाम है, जो मरणोत्तर अवधि में होती है।

हम भारतीयों की यह जो मान्यता है कि धन, पुत्र, वासना आदि पर आसक्ति रहते यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उसे कई बार मृत्यु के बाद बहुत समय तक किसी भूत-प्रेत की योनि में रहना पड़ता है। इसीलिये भारतीय संस्कृति में सदैव ही अनासक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। चार आश्रम—(१) ब्रह्मचर्य-विद्याध्ययन, (२) गृहस्थ, (३) वानप्रस्थ, और (४) संन्यास में अंतिम दो की अधिकांश शिक्षाएँ और कर्तव्य ऐसे हैं, जिनमें प्रत्येक व्यक्ति को धीरे-धीरे परिवार धन-संपत्ति का मोह हटाकर, अपना मन परमार्थ-साधना में लगाना पड़ता था। संन्यास-दीक्षा के बाद तो वह सब कुछ त्यागकर अपने आपको उस तरह अनुभव करता था जैसे—मकड़ी अपने बने बनाए जाले को स्वयं खाकर संतोष अनुभव करती है। तब जिसके पीछे बेटे होते थे, वह उनकी आवश्यकता की संपत्ति उन्हें देकर शेष लोक-कल्याण में लगाकर घर छोड़ देते थे और आत्म-कल्याण की साधना में जुट जाते थे।

मोहांध व्यक्तियों के प्रेत-योनि में जाने का कोई वैज्ञानिक आधार तो अभी समझ में नहीं आता, किंतु बौद्धिक और प्रामाणिक आधार अवश्य हैं। हम में से अनेकों को भूत का सामना करना पड़ जाता है; पर यदि सामान्य लोगों की बात को भ्रम या अंधविश्वास मानें जैसा कि अनेक लोग किसी स्वार्थवश या किसी को धोखा देने के लिये भी भूत-प्रेत की बात कहकर डरा देते हैं तो भी संसार में कई ऐसी घटनाएँ घटी हैं, जिनमें इस विश्वास को विचारशील लोगों का भी समर्थन मिला है।

यह घटना ऐसी ही है और उसे स्वयं श्री जे० डी० विलियम्स ने स्वीकार भी किया है। मैनचेस्टर के दुल्ली स्ट्रीट के अनेक लोगों ने इस घटना को अपनी आँखों से देखा। श्री विलियम्स महोदय ने इस घटना को ३ नवंबर १९६८ के इंदौर से छपने वाले दैनिक

अखबार नई दुनिया में छपाया भी। उनका यह लेख विश्व के अनेक अखबारों में छपा और बहुत समय तक लोगों की चर्चा का विषय भी बना रहा।

मैनचेस्टर की दुल्ली स्ट्रीट पर स्थित छोटे-से मकान के पास जैसे ही प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डॉ० जे० डी० विलियम्स पहुँचे, घर के लोगों ने उनका स्वागत किया। इस घर में पति-पत्नी और उनके दो बच्चे कुल चार ही व्यक्ति रहते थे। चारों तब घर में ही उपस्थित थे।

घर की स्त्री श्री विलियम्स को एक अलमारी के पास ले गई। यहीं पर वह भूत था, जो दिखाई तो नहीं दे रहा था, पर पूछे गये किसी भी प्रश्न और अपनी उपस्थिति का प्रमाण एक विशेष प्रकार की खटपट के द्वारा दे रहा था। उसके संकेत बड़े ही शिक्षित व्यक्तियों जैसे थे। अंग्रेजी वर्णमाला के प्रथम अक्षर "ए" के लिये वह एक बार (खट्-खट्) की आवाज करता था और "बी" के लिये दो बार (खट्-खट्) की आवाज करता था। इसके आगे जो अक्षर जितने नंबर पर पड़ता उस अक्षर के लिए उतने ही बार बिना रुके खट्-खट्-खट् का उसने संकेत बना लिया था; उसी के माध्यम से वह पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी देता था।

यह खेल सारे दिन चलता रहा। घर के दूसरी ओर ऐसी कोई वस्तु नहीं थी कि वहाँ से खट्-खट् की आवाज आ रही होती लोगों ने सारी संभावनाएँ पहले ही छानबीन ली थीं। श्री विलियम्स को तो बहुत देर के बाद बुलाया गया था। उनकी पराविद्या में रुचि होने के कारण ही उन्हें सूचना दी गई थी। उन्होंने सब जाँच-पड़ताल कर ली; पर उन्हें भौतिक कारण न मिला, जिससे खट्-खट् का सूत्र समझ में आता।

स्त्री ने सर्वप्रथम श्री विलियम्स का परिचय कराया फिर पूछा—क्या तुम यहाँ उपस्थित हो ? तो भूत ने उत्तर में सर्वप्रथम बिना रुके २४ बार खट्-खट्-खट् की (इससे अँग्रेजी के वाई अक्षर की सूचना मिलती है।) फिर थोड़ा रुककर ५ बार (ई) फिर रुककर

१६ बार (एस) खट्-खट् की। इस तरह उसने अंग्रेजी में "यस" कहकर अपने वहाँ होने की सूचना दी।

इसके बाद श्री विलियम्स ने उससे अनेक प्रश्न पूछे—भूत ने उनमें से अनेक प्रश्नों के उत्तर दिए। पर ऐसे किसी भी प्रश्न से सहमति प्रकट नहीं कि न उनके उत्तर ही बताए, जो मनुष्य जाति के लिए हितकर नहीं होते। उदाहरण के लिए जुए, सट्टे, शराब संबंधी प्रश्न उसने नहीं बताए। भूत का कहना था जिन बातों से वह स्वयं दुःखी है, वह बात नहीं बताएगा। पर इससे एक बात स्पष्ट हो गई है कि मनुष्य को मृत्यु के बाद जीवन की अनेक घटनाओं की ही नहीं भाषा आदि की भी जानकारी रहती है और उनमें भविष्य को भी जानने की क्षमता आ जाती है; जो आत्मा के गुण का ही परिचायक है।

एकाएक श्री विलियम्स ने पूछा—"आप कौन हैं और क्यों उपस्थित हुए हैं ?" इस प्रश्न के उत्तर में उसी खट्-खट् वाली विधि से उसने बताया—"मैं इसी मकान में रहता था, जब मैं वृद्ध था, तभी मैंने अपने घर वालों से कह दिया था कि मुझे अमुक कब्रिस्तान में दफनाया जाए, पर मेरी इच्छा के अनुसार मुझे नहीं दफनाया गया।"

इसके बाद मैंने लोगों से पूछकर उस मकान में रहने वाले पहले किरायेदारों का पता लगाया, तो उनमें मालूम हुआ कि सचमुच उनके पिता ने मृत्यु से पूर्व इस तरह की इच्छा व्यक्त की थी।

एक और विलक्षण बात थी कि भूत तभी तक यह खट्-खट् की आवाज करता था, जब तक घर में सबसे छोटा वाला लड़का उपस्थित रहता था। पहले कई दिन जब-जब स्कूल या घर से बाहर रहा, भूत ने उपस्थिति नहीं दर्शायी। उस दिन श्री विलियम्स और अधिक खोज-बीन के लिए एक मनोवैज्ञानिक और एक पादरी को भी लाए। इनकी उपस्थिति में भूत एक-दो बातों के ही सामान्य उत्तर दे सका था कि लड़का जो आज कई दिन से छिपा-छिपा

रहा था, इतना भयभीत हो गया कि उसे तीव्र ज्वर हो गया। उसे अस्पताल ले जाना पड़ा। इसके बाद उसके माता-पिता को भी बच्चे की ओर से बड़ी चिंता हो गई और उन्होंने दूसरा मकान ढूँढ़कर उस मकान को ही बदल दिया।

श्री विलियम्स ने भूत संबंधी जिन तथ्यों का पता लगाया, उनमें से कई जानकारी की दृष्टि से बड़े उपयोगी हो सकते हैं। भूत किसी का अहित नहीं कर सकता, यदि कर सकता है तो वह कोमल और भीरू मस्तिष्क वालों को ही डरा सकता है या शरीर पर किसी तरह का नियंत्रण कर सकता है। दूसरे भूत को जिस वस्तु में इच्छा होती है, वह केवल उतना ही सोचता रहता और उसी का दुःख करता रहता है। जब तक उस अवस्था में भी उसकी यह इच्छा शिथिल नहीं पड़ जाती, तब तक मृत्यु वाली निद्रा नहीं आती और जीवात्मा दूसरे जन्म की तैयारी कर पाती।

लंदन में एक अंग्रेज-दंपत्ति थे। पति-पत्नी दोनों शराबी थे। पत्नी की मृत्यु के बाद पति ने मकान का कुछ हिस्सा मार्टिन को किराए पर दे दिया। एक दिन मार्टिन की स्त्री ने घर में एक काले वस्त्र धारण किये हुए स्त्री को देखा, उन्होंने समझा यह मेरी माँ है, जैसे ही वह उससे मिलने के लिए आगे बढ़ी कि वह स्त्री सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गई और ऊपर के कमरे में जल रही मोमबत्ती बुझा दी। फिर उसके बाद कोई दिखाई न दिया। इसके कई दिन बाद वैसी ही छाया फिर दिखाई दी, पर प्रयत्न करने पर भी न तो उससे कोई बातचीत की जा सकी, न उससे मिला ही जा सका। आगे बढ़ते ही वह छाया अदृश्य हो जाती। इस घटना को बाद में पड़ौसियों ने भी देखा और यह माना कि यह पूर्व-अंग्रेज स्त्री की भटकती हुई आत्मा है। आत्माओं के इस तरह के क्रिया-कलापों की घटनाएँ भारतवर्ष में बहुतायत से होती हैं।

प्रसिद्ध साहित्यकार लार्ड ब्रोह्म के जीवन की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना आत्मा के अस्तित्व पर प्रकाश डालती है। उनके एक मित्र थे, उन्हें आत्माओं के अस्तित्व के संबंध में जानने का

बड़ा चाव रहता था। दोनों ऐसे लेख जिनमें कोई ऐसी जानकारी होती थी, ढूँढ़-ढूँढ़कर पढ़ते थे। उन्होंने सुना था कि भारतवर्ष में कुछ ऐसे योगी हैं, जो मृतात्माओं के साथ साक्षात्कार कराते हैं। एक दिन इस पर दोनों मित्रों ने निश्चित किया—"हम में से जिसकी मृत्यु हो, वह दूसरे से मिलने अवश्य आए।" यह बात मस्तिष्क में गहराई तक बैठ जाए, इसके लिये उन्होंने उंगली काट-कर एक कागज में हस्ताक्षर भी किए।

कुछ दिन बाद मित्र सर्विस के लिए भारतवर्ष चला आया। इसके बाद १९ दिसंबर १७९९ की बात है, लार्ड ब्रोह्म अपने स्नानागार पहुँचे, कपड़े उतारकर कुर्सी में रखे और दरवाजा बंद करके टब में स्नान करने लगे। ब्रोह्म साहब लिखते हैं—"जैसे ही मैंने टब से अपना सिर बाहर निकाला कि देखता हूँ, मेरे मित्र महोदय सामने कुर्सी पर बैठे हैं। दरवाजे बिल्कुल बंद थे, मैं घबरा गया कि वह कोई प्रेत तो नहीं है और उसके बाद मुझे जब होश आया तो कुर्सी पर कोई नहीं था, दरवाजे पहले की तरह बंद थे। उसके ८-१० दिन बाद भारत से आया एक पत्र मिला, जिसमें यह लिखा था कि १९ दिसंबर के दिन मित्र की मृत्यु हो गई है। इस घटना से मुझे पूरा विश्वास हो गया कि मृत्यु के बाद भी आत्मा रहती है और जाग्रत् जीवन की उसमें तमाम स्मृतियाँ भी रहती हैं।"

ये घटनाएँ यही प्रकट करती हैं कि तीव्र आकांक्षा और राग-आसक्ति के बंधन जीवात्मा को मृत्यु के उपरांत भी खींचते और तदनुकूल हलचल के लिए बाध्य करते रहते हैं। इसीलिए जीवन में मोहासक्ति के बंधन ढीले कर रखने की शिक्षा प्राचीन भारत में दी जाती थी तथा उसी के अनुरूप आश्रम-व्यवस्था भी की गई थी। वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम मोहासक्ति की समाप्ति के लिए तथा चेतना के विस्तार द्वारा आत्मविकास के पथ पर निरंतर अग्रसर होने के लिए ही रखे गए थे।

मृत्यु के समय, मरणशील व्यक्ति से दान कराने की व्यवस्था भी इसी कारण थी कि व्यक्ति के सब मोह मिट जाएँ, आसक्ति के बंधन छूट जाएँ। अंतिम समय व्यक्ति के भीतर वे ही संस्कार तथा वे ही आकांक्षाएँ प्रबल होकर उभर आती हैं, जो जीवन भर आस्था के क्षेत्र में, व्यक्तित्व का मूल बनी फैलती और घुली-मिली रहती हैं। अंत समय में उभरी भावनाएँ ही मरणोत्तर जीवन में भी सक्रिय रहती हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा है—

"यं यं वापि स्मरन्मानं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव-भावितः।।"

अर्थात् हे अर्जुन ! जो अंत समय में जिन भावों का स्मरण करता हुआ देह छोड़ता है, उन्हीं भावों से अनुप्राणित होकर वैसा ही नया शरीर, नया व्यक्तित्व प्राप्त करता है।

संन्यासी से इसीलिए संन्यास लेते समय उसके श्राद्ध-संस्कार भी उसी के द्वारा करा लिए जाते हैं कि उसकी कोई भी आकांक्षा-आसक्ति सूक्ष्म रूप में भी शेष न रहे।

जो मनुष्य जितनी अधिक वासनाएँ-आकांक्षाएँ साथ लेकर मरता है, उसके भूत होने की संभावना उतनी ही अधिक रहती है। अतः इस दुर्दशा से मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय ऐसी जीवन दृष्टि, चिंतन पद्धति तथा आचरण-अभ्यास को विकसित करना है, जो वासनाओं-तृष्णाओं और आकांक्षाओं से निर्लिप्तता का भाव दृढ़ करे।

मनु संहिता में कहा है—

वान्ताश्यत्यल्कामुखः प्रेतो विप्रो धर्मात् स्वकाच्युतः।
अमेध्य कुणपाशी च क्षत्रियः कटपूतनः।।
मैत्राक्षज्योतिकः प्रेतो वैश्यो भवति पूयभुक्।
चैलाशकश्च भवति शूद्रो धर्म्मात्-स्वकाच्युतः।।

अर्थात् ब्राह्मण कर्तव्य भ्रष्ट होने से दर्दिभक्षक ज्वालामुख प्रेत होता है। क्षत्रिय ऐसा होने से शव एवं विष्ठा भक्षक कटपूतन नामक

प्रेत होता है। वैश्य कर्मभ्रष्ट होने से पूयभक्षक मैत्राक्ष ज्योतिक नामक प्रेत होता है एवं शूद्र ऐसा होने से चैलाशक नामक प्रेत होता है।

तात्पर्य यह है कि कर्तव्यभ्रष्टता और विवेकभ्रष्टता ही मरणोत्तर जीवन में प्रेतावस्था का कारण बनती है। साधारण मनुष्य के सूक्ष्म शरीर की स्थूल शरीर एवं इंद्रियों के साथ विशेष आसक्ति होने से मनुष्य इच्छानुसार स्थूल शरीर धारण नहीं कर सकता। योगियों का सूक्ष्म शरीर वासना द्वारा आबद्ध नहीं होने से वे अपनी इच्छानुसार शरीर धारण कर सकते हैं। प्रेतों का स्थूल शरीर होता ही नहीं, केवल सूक्ष्म शरीर होता है। सूक्ष्म शरीर में असीम बल है, इस कारण प्रेत वासना के वेग को प्रबल बनाकर, आवश्यकतानुसार स्थूल शरीर धारण कर सकता है। किंतु योगी के स्थूल शरीर धारण एवं प्रेत के स्थूल शरीर धारण में अनेक अंतर है। योगी का अंतःकरण वासनारहित होने से वह योग सिद्धि की सहायता से अपनी इच्छानुकूल नाना प्रकार का शरीर धारण कर सकता है। प्रेत ऐसा नहीं कर सकता, वह केवल अपनी किसी तीव्र प्रबल वासना के अनुसार थोड़े समय के लिए स्थूल शरीर बना सकता है।

उदाहरणार्थ, यदि किसी माता का चित्त अपने पुत्र में आसक्त हो, वह उसी का ध्यान करते हुए शरीर त्याग करे एवं इसी कारण उसको प्रेत योनि की प्राप्ति हो तो, वह उस वासना के तीव्र वेग से अपने पूर्व स्थूल शरीर के अनुरूप ही स्थूल शरीर बनाकर पुत्र के निकट आ सकती है। ऐसे ही स्त्री पति के निकट या पति स्त्री के निकट आ सकता है। प्रेतों का शरीर सब समय एक जैसा नहीं होता, सूक्ष्म पंचतत्त्वों पर आधिपत्य होने से प्रेत आवश्यकतानुसार किसी न किसी तत्त्व का आकर्षण करके, उसी के अनुसार शरीर धारण कर सकता है, यदि वह शक्तिशाली प्रेत हो। वायुतत्त्व का आकर्षण करके वह प्रबल आँधी का रूप धारण कर किसी को भयभीत कर सकता है। किसी समय अग्नितत्त्व की सहायता से भयानक आग्नेयरूप धारण करके मनुष्य को डरा सकता है। कभी

छायारूप धारण करके मनुष्य के सामने आ सकता है एवं बातचीत भी कर सकता है। प्रेतों के छाया शरीर की ये बातें कान से नहीं सुनी जा सकतीं। प्रेत जिससे अपनी बात कहना चाहता है, उसके हृदय में ऐसी प्रेरणा उत्पन्न करता है, जिससे वह मनुष्य अपने मन में प्रेत की बात सुन सकता है एवं उसके साथ वार्तालाप भी कर सकता है। कुछ प्राणियों को ऐसी स्वाभाविक दृष्टि भी होती है कि वे प्रेत देख सकते हैं। कुछ मनुष्यों में भी प्रेत देखने की स्वाभाविक दृष्टि होती है। ऐसे मनुष्य प्रेत की छाया, प्रेत की मूर्ति या प्रेत ने किसी व्यक्ति पर आवेश किया हो, तो उस व्यक्ति के अंदर प्रेत को देख सकते हैं। इस सामर्थ्य को ही 'साइकिक साइट' कहते हैं।

स्वभाव के अनुसार प्रेत भी अच्छे-बुरे नाना प्रकार के हुआ करते हैं। सच्चरित्र निरीह व्यक्ति मोहादि के कारण प्रेतयोनि प्राप्त करके भी किसी का अनिष्ट अथवा हानि नहीं करते हैं, किंतु जो मनुष्य स्त्री या पुरुष जीवित अवस्था में ही दुष्ट प्रकृति के होते हैं, वे मृत्यु के अनंतर प्रेतयोनि प्राप्त करने पर अपनी दुष्टता से बाज नहीं आते हैं। इस श्रेणी के प्रेत मनुष्य को भय दिखाते हैं, अत्याचार करते हैं, दूसरों पर आक्रमण करते हैं और नाना प्रकार के उपद्रव करते हैं। परंतु ये सब उपद्रव दुर्बल हृदय मनुष्यों के ऊपर ही प्रभाव डाला करते हैं। आत्मबल संपन्न, उन्नत मन के सदाचारी एवं पवित्र स्त्री-पुरुषों को प्रेत कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकता है। प्रायः स्त्री या बालक पर ही प्रेतों का आक्रमण देखा-सुना जाता है, क्योंकि इन दोनों में मानसिक भावनाओं की स्वभावतः प्रधानता हुआ करती है, ज्ञान की प्रधानता नहीं रहती। नीच प्रकृति के दुष्ट प्रेत जिस पर आक्रमण करते हैं, उसको आत्महत्या कर डालने के लिए भी प्रेरणा करते हैं, जिससे वह मरने के बाद उन्हीं की योनि में आ जाए। आत्महत्या करके प्राण त्याग करने वाले प्रेतों में आत्महत्या करने की अंतिम प्रवृत्ति प्रबल रूप में रहती है, इस कारण वह दूसरों को भी उसी के लिए प्रेरित करता है। विक्षुब्ध, अशांत, उद्विग्न

जीव अपने विक्षोभ और उद्विग्नता के ही विस्तार की धुन में रहते हैं। विक्षोभ प्रेरित प्रेतों का जीवन बड़ा ही दुःखमय होता है, क्योंकि जिन वासनाओं के कारण प्रेतयोनि की प्राप्ति होती है, प्रेतयोनि में उनकी कमी नहीं होती, किंतु वे और भी प्रबल हो उठती हैं। अतः प्रेत अपनी उन वासनाओं की आधार वस्तुओं को पाने एवं भोग करने के लिए सदा लालायित रहता है। परंतु उस योनि में उन वस्तुओं का वह यथेच्छ भोग नहीं कर सकता, इस कारण निराशा की अग्नि में वह दिन-रात जला करता है। मोह-मुग्ध प्रेत सदा पत्नी-संतति आदि के साथ मिलकर जीवित अवस्था की तरह रहना चाहता है, यह सुविधा न मिलने से वह बड़ी यंत्रणा भोगा करता है। कभी-कभी प्रेत अपने प्रिय पात्र उन व्यक्तियों को मारकर अपनी योनि में लाना चाहता है एवं इसके लिए चेष्टा करता है। उस चेष्टा में कृतकार्य न होने से भी वह हताश होकर बड़ा दुःख पाता है। कभी कोई पुरुष अपनी प्रथम पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह करता है, ऐसी दशा में यदि उसकी प्रथम पत्नी को प्रेतत्व हुआ हो एवं उस मृत स्त्री की आसक्ति अपने जीवित पति पर हो जैसा होना स्वाभाविक है, तो वह अपनी सपत्नी की ईर्ष्या में दिन-रात जला करती है और वह अपने पति के पास स्वयं आना चाहती एवं सौत के साथ पति का विच्छेद कराने की यथासाध्य चेष्टा भी करती है। जिस घर में दंपत्ति रहते हैं, उसी में वह प्रेतयोनि प्राप्त स्त्री भी रहने की चेष्टा करती है। इसी प्रकार आजीवन धन संचय करके, जो कृपण धन के मोह से प्रेत होते हैं, वे भी घर के जिस स्थान में उनका धन रहता है, वहीं सदा रहने की चेष्टा करते हैं। वह धन ले जाने का भी प्रयत्न करते हैं एवं उस प्रयत्न में कृतकार्य न होने पर हताश होकर बड़ी वेदना भोगते हैं। ऐसे ही व्यभिचारी पुरुष प्रेतयोनि में जाकर अपनी व्यभिचार वासना को परित्याग नहीं कर सकते। इस कारण ऐसे प्रेत परस्त्री या ऐसी प्रेतिनी परपुरुष के साथ अपनी नीच-वासना चरितार्थ करने की

चेष्टा करती है। प्रेतों की इस प्रकार की कामासक्ति के अनेक प्रत्यक्ष प्रमाण सुने गए हैं। प्रेत जिस पुरुष या स्त्री पर कामासक्त होता है, बहुत समय उसे मार डालने का भी प्रयत्न करता है और प्रेत-निवारक-मंत्र औषधि आदि के द्वारा परास्त एवं निराश होकर दुःख से मर्माहत होता है। प्रेत योनि अज्ञानमय होने के कारण बहुत समय प्रेत यह समझ भी नहीं पाता कि उसके अंतःकरण में क्यों इतना दुःख का दावानल जल रहा है ? और क्यों उसका दुःख शांत नहीं होता ? अज्ञान से विमोहित चित्त प्रेत यों ही दुःख से व्याकुल होकर, पागल की तरह इधर-उधर दौड़ता रहता है। हृदय क्या चाहता है, यह भी वह नहीं समझ पाता, अंतःकरण में इतनी अशांति क्यों है, यह भी वह निर्णय नहीं कर सकता, फिर भी दिन-रात उसका हृदय दुःख-दावानल से भस्मीभूत हुआ करता है, इस प्रकार प्रेतों की दशा बड़ी ही दुःखमय होती है। जो उनके जीवनकाल की अशांति, अविवेक और अनाचारमय जीवन की ही प्रतिध्वनि होती है।



न स्वयं विक्षुब्ध हों, न औरों को विक्षुब्ध करें

*

अब से कोई ४० वर्ष पूर्व इंग्लैंड में एक ऐसी घटना प्रकाश में आई, जिसने एक प्रकार से तहलका ही मचा दिया।

पोर्ट्स साउथ रोड इशर कस्बे के पास गुजरती है। इन घने जंगलों से घिरे हुए क्षेत्र में लगातार ऐसी घटनाएँ होने लगीं कि कोई मोटर उधर से गुजरती, तो बंदूक की गोली की तरह सनसनाती हुई चीज आती और मोटर के शीशे, छत या दरवाजे से टकराकर उसमें छेद कर देती। छेद एक इंच का इतना साफ, सीधा, गोल और व्यवस्थित होता, मानो किसी बहुत होशियार मिस्त्री ने सधी परखी हुई मशीन से किया है। अन्यथा काँच भी किसी चीज की टक्कर से टूट सकता है, उसके टुकड़े बिखर सकते हैं, पर चिकने किनारे वाला सही छेद होना तो सचमुच एक बड़े अचंभे की बात है।

घटनाएँ लगातार होने लगीं। उधर से गुजरने वाली मोटरों को उस दुर्घटना का अक्सर सामना करना पड़ता। मोटर रुकती, आस-पास का क्षेत्र खोजा-छाना जाता, पर आक्रमण कहाँ से होता है ? कौन करता है ? इसका कुछ भी पता न चलता।

पुलिस ने भारी माथा-पच्ची की, पर कुछ पता न चला। गुप्तचर विभाग के स्काटलैंड यार्ड ने आहत मोटरों को वैज्ञानिक जाँच के लिए प्रस्तुत किया, पर वहाँ भी सुराग न मिला। इशर कस्बे की नगरपालिका ने तो पुलिस के खिलाफ एक प्रस्ताव ही पास कर डाला कि वह इस क्षेत्र को आतंकित करने वाली इन वारदातों को न रोक पाती है, न खोज करती है। पुलिस वाले लाचार थे, कुछ समझ ही काम नहीं करती थी कि किस आधार पर खोज आगे बढ़ाई जाए ? कितने ही पत्रकार वस्तु स्थिति पर प्रकाश डालने के लिए उधर पहुँचे। मोटरों पर अदृश्य आक्रमण होने, केवल शीशे टूटने, गोल और सही छेद होने, कोई जन हानि

न होने मोटर के इंजनों को कोई आघात न लगने की बात एक साथ मंन बिठाने से ऐसा चित्र बन जाता था, जिसका हल सूझ ही न पड़े। सुरक्षा के सारे प्रयत्न बेकार हो गए। घटनाएँ रुक नहीं रही थीं। कौतूहल और आतंक बढ़ने से उस क्षेत्र का आवागमन रुकने भी लगा था और हर तरह परेशानी अनुभव की जा रही थी।

कोई कहते थे कि इस घने जंगल में कोई मृत्यु किरण जैसा परीक्षण हो रहा है और वे किरण छिटककर ऐसा छेद करती हैं। इन किंवदंतियों का विज्ञान विभाग ने स्पष्ट खंडन किया। फिर कारण क्या हो सकता है ? यह रहस्य अभी भी जहाँ का तहाँ बना हुआ है। कुछ समय बाद दुर्घटनाएँ बंद हो गईं, पर गुप्तचर विभाग के खोज-कार्यों में वह तथ्य अभी भी जहाँ का तहाँ मौजूद है।

परोक्ष जीवन और अदृश्य जगत् पर विश्वास करने वाले इस घटना क्रम का संबंध दो भूतकालीन तथ्यों के साथ जोड़ते हैं। इनमें से एक तथ्य यह है कि यह क्लेयर माउंट स्टेट पहले एक जागीरदार ड्यूक ऑफ न्यू कान्सिल के पास थी। उसने इस क्षेत्र में एक सुंदर झील बनवाई। विलियम केंट नामक ठेकेदार ने इसे बहुत दिलचस्पी और खूबसूरती के साथ बनवाया। तैयार हो गयी तो ड्यूक ने उसका पैसा दबा लिया और अपने नौकरों से उसे उसी झील में फिकवा दिया। बेचारा किसी प्रकार निकल तो आया, पर दो दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। सुना जाता है कि उसकी क्षुब्ध आत्मा को मोटर स्वामी ड्यूक के प्रति द्वेष अभी भी विद्यमान होगा और वह ड्यूक के साथ-साथ मोटरों से भी घृणा करने लगी होगी और अब ड्यूक के न रहने पर उन्हीं से बदला लेती होगी।

दूसरी एक और घटना भी इस स्टेट से संबंधित है और उस आधार पर भी उद्विग्न मृतात्मा द्वारा इस प्रकार के उपद्रव की बात सोची जाती है। लार्ड क्लाइव ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से हिंदुस्तान गया। वहाँ उसने छल-बल से जहाँ अंग्रेजी राज्य बढ़ाया, वहाँ अपना व्यक्तिगत स्वार्थ-साधन भी खूब किया। वह करोड़ों रुपये की पूँजी बनाकर ले गया और जागीरी शान से रहने के लिए उसने

क्लेयर माउंट का इलाका खरीद लिया। नवाबी ठाठ और वैसी ही विलासिता के साथ वहाँ रहने लगा। इंग्लैंड भर में उसके दुष्ट-दुराचरण की चर्चा थी। हर कोई उससे घृणा करता था। कहीं उसे न सम्मान मिलता था, न स्वागत और न सहयोग। इस जंगल में महल बनाकर वह बहुत-से खानसामा, रसोइया, नौकर, वेश्याएँ साथ लेकर रहा करता था। किसी को वह सुहाता न था, न उसे कोई। सुनसान जंगलों में मरघट के प्रेत की तरह विचरण करके, वह अपना जी बहलाता था, अपने पुराने कुकृत्यों की याद करके वह जीवन के अंतिम दिनों में अर्द्ध-विक्षिप्त की तरह रहने लगा था। खूँख्वारों जैसी इसकी प्रकृति हो गई थी, मोटरों की आवाज उसे बहुत ही नापसंद थी। उसने एक दिन सनक में आकर पास वाली सड़क को बंद करा दिया और मोटरों के लिए बारह मील दूर रास्ता बना दिया, ताकि उसके कान में उसकी द्वेष-केंद्र मोटर की न आवाज आए न उसकी सूरत दीखे।

क्लाइव भारत में किए गए अपने द्वारा कुकर्मों की लंबी गाथा के पृष्ठ खोलता, कोई दूसरा सुनने वाला न होता तो अपने आपसे ही बातें करता। एक दिन इसी असह्य मानसिक तड़पन में आत्महत्या कर ली और घिनौने कुत्ते की तरह ऐसे ही उधर कहीं दफना दिया गया।

क्लाइव की आत्मा संभव है अपना मोटर-द्वेष अभी भी धारण किये हुए हो और संभव है इसी क्षेत्र में उनका आवागमन उसे सहन न होता हो तथा आक्रमण का ऐसा अनोखा शस्त्र उसी के द्वारा प्रयुक्त किया जाता हो।

मरने के बाद मनुष्य की काया ही नष्ट होती है। अंतःकरण चतुष्टय मरने के बाद भी यथावत् बना रहता है। यदि मन आत्मग्लानि, आक्रोश आदि भावों से भरा रहे, तो उससे न केवल इस जीवन में भी वह मनःस्थिति बहुत अंशों में ज्यों की त्यों बनी रहती है वरन् विश्राम के लिए मिले हुए उस अवकाश में भी प्राणी को चैन नहीं लेने देती।

इस तथ्य पर उपरोक्त घटनाओं से प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार का यही एक प्रमाण नहीं, वरन् समय-समय पर ऐसी ही अनेक घटनाएँ घटित होती रहती हैं, पर इन्हें महत्त्व नहीं मिलता। उपहास और अविश्वास के गर्त में वे घटनाएँ भी उपेक्षित हो जाती हैं, जो वस्तुतः बहुत प्रामाणिक थीं; यदि उनका गहराई से विश्लेषण होता तो उस प्रत्यक्ष के आधार पर परोक्ष पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ सकता था।

उपरोक्त इशर के कस्बे के समीप वाले जंगल की घटना को इसलिए महत्त्व मिला कि पुलिस, पत्रकार आदि लोगों ने उसमें दिलचस्पी ली। यदि वे लोग उस खोजबीन में भाग न लेते तो मोटर वालों की ही सनक या शरारत कहकर, उसे उपेक्षित कर दिया गया होता। यह ठीक है कि कितनी ही मनगढ़ंत ऊल-जुलूल बातें भी होती रहती हैं, पर उनमें से कुछ ऐसी भी होती हैं, जिनकी खोजबीन करने से उन तथ्यों पर प्रकाश पड़ सकता है, जो अभी तक एक प्रकार से अपूर्ण, उपेक्षित और अविश्वस्त ही बने हुए हैं।

इस घटना में ठेकेदार की आत्मा का प्रकोप सिद्ध नहीं होता, क्योंकि एक व्यक्ति के दुर्व्यवहार का क्षोभ प्रायः एक तक ही सीमित रहता है। दूसरी बात यह है कि अन्याय-पीड़ित व्यक्ति की अंतरात्मा कलुषित नहीं होती, इसलिए वह उग्र स्तर के ऐसे विग्रह नहीं करती जो अन्य निर्दोष लोगों को कष्ट पहुँचाए।

जिसका जीवन स्वयं में कलुषित रहा हो, जिसने अनेकों को कष्ट पहुँचाने में रस लिया हो, स्वार्थ सिद्धि के लिए कितनों के साथ ही अनाचार विश्वासघात किया हो ? ऐसे ही लोगों की आत्माएँ इतनी हिंस्र हो सकती हैं, जो अनायास लोगों को कष्ट पहुँचाकर, अपनी पूर्व आकांक्षाओं की तृप्ति करें। इस दृष्टि से क्लाइव की आत्मा के द्वारा यह उपद्रव होता हो तो आश्चर्य की बात नहीं है।

घटना इस तथ्य पर प्रकाश डालती है कि एक शरीर छोड़ने और दूसरा प्राप्त करने के मध्यांतर में आत्मा को सूक्ष्म शरीर

धारण करके, अंतरिक्ष में विचरण करना पड़ता है। यह इसलिए भी होता होगा कि शरीर रहते किए हुए दुष्कृत्यों के परिणामों को वह अधिक विस्तारपूर्वक देख-समझ सके और भविष्य के लिए उस अवांछनीय नीति की अनुपयुक्तता को स्वीकार कर सके।

दूसरा तथ्य यह प्रकट होता है कि सूक्ष्म शरीर बिलकुल असमर्थ नहीं हो जाता, उसमें न केवल भावनात्मक क्षमता रहती है, वरन् भौतिक वस्तुओं को प्रभावित करने जैसी सामर्थ्य भी रहती है। यदि ऐसा न होता तो मोटर के शीशों में ठीक गोल छेद करना कैसे बन पड़ता ? उस क्षमता को प्रेत जीवन में भी भले और बुरे प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त करके पुण्य और पाप की मात्रा बढ़ाई जा सकती है।

मरणोत्तर जीवन में संस्कार क्षेत्र प्रौढ़ रहता है, विचार तंत्र सो जाता है। जिस प्रकार के विचारों और कार्यों में मनुष्य जीवन भरा रहता है, वही अंतःचेतना मरणोत्तर स्थिति में प्रबल रहती है और अनायास ही उसी स्तर की गतिविधियों का क्रम चलता रहता है।

मरणोत्तर जीवन, शांत, सुखी, परोपकारी स्थिति का रहे, इसके लिए इसी जन्म में तैयारी करनी पड़ती है। उच्च विचार और शुद्ध जीवन रखकर, जहाँ इहलौकिक जीवन सराहनीय और सम्मानित स्तर का रखा जा सकता है, वहाँ उसका परिणाम मरणोत्तर काल में देवोपम हो सकता है। दुष्ट और दुरात्म जीवन क्रम न इस लोक में सराहा जाता है, न परलोक में शांति मिलने देता है। विक्षुब्ध, दुष्कर्म निरत लोग न इस लोक में शांति पाते हैं और न ही परलोक में।

● अनीति का प्रतिशोध

जापान की जनश्रुतियों में सत्रहवीं सदी के महाप्रेत सोगोरो की कथा एक ऐतिहासिक तथ्य की तरह सम्मिलित हो गई है और अनाचार बरतने वालों को अक्सर वह घटना-क्रम इसलिए सुनाया जाता रहता है कि वे अनीति से बाज आएँ।

जापान उन दिनों सामंती जागीरों में बँटा हुआ था। राजधानी तो यदो नगरी थी, पर जागीरदार अपने-अपने छोटे ठिकानों से राज-काज चलाते थे। ऐसा ही एक ठिकाना था शिमोसा प्रांत का साकूरागढ़। इसका एक सामंत था—कोत्सुके। उसने प्रजा पर अत्यधिक कर लगाए और किसानों पर इतने जुल्म ढाए कि वे त्राहि-त्राहि कर उठे। अंततः १३६ गाँवों के किसानों ने मिलकर अपना दुःखड़ा जागीरदार के कानों तक पहुँचाने का निश्चय किया। वे सोचते थे शायद छोटे कर्मचारी उन्हें सताते हैं। सामंत को बात मालूम पड़ेगी, तो वह उनकी पुकार सुनेगा। इस विचार से वे उनके प्रतिनिधि साकूरा चल पड़े। उनका जत्थेदार था ४८ वर्षीय सोगोरो। उन लोगों ने एक लंबी अर्जी लिखी और प्रयत्न किया कि उसे जागीरदार को दें। अधिकारियों ने उन्हें भेंट करने की इजाजत नहीं दी और अर्जी को पढ़कर वापस लौटा दिया। इतने पर भी उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी और जब सामंत अपने गढ़ में प्रवेश कर रहा था तो उसकी बग्घी रोककर अर्जी हाथ में थमा ही दी। वहाँ भी उसे रद्द कर दिया गया। अन्य किसानों को तो वापस लौटा दिया गया, पर सोगोरो एक सराय में ठहरा ही रहा और उसने जापान सम्राट तक किसानों की दुःख गाथा पहुँचाने का निश्चय किया। संयोगवश सम्राट अपने पूर्वजों की समाधि पर पूजा करने के लिए वहाँ आने वाले थे। कृषक मुखिया ने यह अच्छा अवसर समझा और उस अर्जी की नकल सम्राट का भी रास्ता रोककर, उनके हाथ में थमा दी।

परिणाम तो कुछ नहीं निकला, पर सामंत ने सोगोरो को गिरफ्तार करा लिया। उस पर शासकों के विरुद्ध धृष्टता बरतने और षड्यंत्र करने का मुकदमा चलाया गया। दंड में न केवल उसे वरन् उसके सारे परिवार को कत्ल कर देने का आदेश सुनाया गया। जनसमूह की उपस्थिति में ४८ वर्षीय सोगोरो, उसकी ३८ वर्षीया पत्नी मिन, १३ वर्षीय पुत्र जेन्नोसूके, १० वर्षीय पुत्र सोहैयी, ७ वर्षीय पुत्र किहावी का सिर धड़ से उड़ा दिया गया। दर्शक कलेजा थामकर, इस कुकृत्य को देखते रह गए।

लाशें दफना दी गईं; पर वातावरण में न जाने कैसा भयंकर उभार आया कि सर्वत्र एक आग और घुटन अनुभव की जाने लगी ? शासकों को विचित्र भयानकता ने घेर लिया। तीसरे ही दिन सुधार घोषणाएँ हुईं। किसानों पर अत्याचार की जाँच आरंभ हुई और साकूरागढ़ के समस्त सलाहकार, चार जिलों के शासनाध्यक्ष, बाईस अफसर, सात न्यायाधीश, तीन लेखा परीक्षक बर्खास्त कर दिए गए और किसानों पर से समस्त बढ़े हुए कर तथा लगे हुए प्रतिबंध उठा लिये गये।

ऐसा विचित्र परिवर्तन कैसे हुआ ? सामंत यकायक कैसे बदल गया ? यह सब आश्चर्य का विषय था; पर जानने वाले कहते थे सोगोरो का प्रेत इस बुरी तरह राज्य परिवार के पीछे पड़ा है कि अब उन्हें किसी प्रकार अपनी खैर दिखाई नहीं पड़ती। सामंत कोत्सुके नोसुके और उसकी पत्नी सोते-जागते भयंकर प्रेत छाया को अपने चारों ओर अट्टहास करते हुए देखते और अनुभव करते, उन्हें अब तो मृत्यु का ग्रास बनना ही पड़ेगा। नंगी तलवार का पहरा बिठाया गया, ओझा-तांत्रिक बुलाए गए और किसी से कुछ रोकथाम न हुई। सामंत की पत्नी बीमार पड़ी और चारपाई पर से उसकी लाश ही उठी। वह स्वयं विक्षिप्त-सा रहने लगा। एक अवसर पर राजधानी याहीशी में सभी सामंत सम्राट को वार्षिक भेंट देने के लिए उपस्थित हुए थे। इनमें से साकेयी के साथ कोत्सुके की झड़प हो गई, उसने आव गिना न ताव झट तलवार चला दी और उसकी हत्या कर दी। इसके बाद वह जान बचाकर भागा और अपनी गढ़ी में आ छिपा। सम्राट ने पाँच हजार सैनिक भेजकर, उसकी गढ़ी पर कब्जा कर लिया और कबूतर पकड़ने जैसे जाल में बँधवाकर राजधानी बुलाया। जहाँ उसका सिर उसी तरह उड़ाया गया जैसा कि सोगोरो का उड़ाया गया था।

अनीतिपूर्वक सताने वालों को इस घटनाक्रम को सुनाकर यह शिक्षा दी जाती है कि दुर्बल को सताने वाला यह न समझे कि वह सर्व-समर्थ है। अन्याय के प्रति विद्रोह की आग इतनी प्रचंड होती है

कि प्रेत बनकर भी प्रतिशोध ले सकती है और अत्याचारी को उसके कुकृत्य का मजा चखा सकती है। दुर्बलों का विक्षोभ कभी भी प्रबल प्रचंड बनकर, आततायी पर टूट पड़ सकता है।

● विक्षुब्ध आत्मा का अभिशाप

ऐसी ही एक और घटना है। अफ्रीका के नाइजीरिया देश में एक समय अंग्रेजों का उपनिवेश था। अब यों वहाँ आजादी है, पर प्रभुत्व वहाँ स्थायी रूप से बसे हुए गोरों का ही है।

उस क्षेत्र के एक अंग्रेज अफसर फ्रेंक हाइब्स ने नाइजीरिया में आँखों देखा प्रेत-विवरण प्रकाशित कराया था। वह अफसर किसी काम में 'इसुइंगु' गया। वहाँ एक पुराना टूटा-फूटा डाक बंगला था। उसने उसी में ठहरने का निश्चय किया। उस क्षेत्र के रहने वाले इसुओरगु कबीले के आदिवासी उसे समझाते रहे कि इस डाक बंगले में प्रेत रहते हैं, इसलिए वह वहाँ न रहे। उन्हीं के घरों में ठहर जाएँ।

अफसर उनकी अंध मान्यताओं पर हँसता रहा और कहता रहा—"उनके गंदे घरों की अपेक्षा प्रेत के साथ खुले डाक-बंगले में रहना अच्छा है।" मजदूरों ने उस खंडहर की सफाई कर दी, खाने, ठहरने के साधन जुटा दिए, पर रात को वहाँ रहने के लिए कोई तैयार न हुआ। निदान उसे अकेले ही उसमें रहकर रात बितानी पड़ी।

रात को बारह बजे तक वह सोता रहा किंतु अर्धरात्रि होते ही किसी ने उसकी मच्छरदानी खींची। उठकर देखा तो कोई नजर नहीं आया किंतु बदबू इतनी तेज फैल रही थी कि वहाँ ठहरना मुश्किल हो गया। इतने में एक तेज हवा के झोंके ने बंगले की खिड़कियाँ जोरों से खड़काना शुरू कर दीं और मेज पर रखी चाय की प्लेट जमीन पर पटक दीं। साथ ही किन्हीं भारी पैरों की आवाज, उसे इस तरह सुनाई पड़ने लगी, मानो कोई बड़ी आकृति का प्राणी इधर टहल रहा हो, भरी पिस्तौल हाथ में लेकर हाइब्स बाहर निकला तो देखा कि अँधेरे में कोई छाया जैसी आकृति बरामदे में टहल रही है। अफसर ने आवाज दी, पर कोई उत्तर न मिला; तो उसने दो गोलियाँ दाग दीं। पर इसका

कोई प्रभाव उस आकृति पर न पड़ा। आकृति समीप बढ़ती आई और उसकी शकल आसानी से दीख पड़ने लगी। भयंकर चेहरा, नाक बैठी हुई, होठ खुले हुए, गंजा सिर, स्थिर पुतली, गड्ढों और झुर्रियों से भरे गाल—वह बड़ा भयानक लग रहा था। अफसर मूर्तिवत् सुन्न खड़ा रहा। वह सोच न सका कि वह कौन है और क्या कर रहा है ? धीरे-धीरे आकृति पीछे हटी और खंभे पर चढ़ने लगी। अफसर ने उसे निशाना बनाकर दो गोलियाँ और चलाईं, पर वह लगी किसी को नहीं। छाया भी गायब हो गई। डरा हुआ हाइब्स बेतहासा भागा और कुछ दूर एक चीख के साथ बेहोश हो गया। आदिवासी यह जानने के लिए इर्द-गिर्द ही घूम रहे थे कि देखें क्या घटना घटित होती है ? वे लोग चीख सुनकर दौड़े आए और अफसर को उठाकर अपनी चौपाल पर ले गए। जहाँ उसे कई घंटे बाद होश आया।

दूसरे दिन अफसर ने आदिवासियों को बुलाकर उनके परिचित प्रेत की बाबत पूछताछ की तो इसुओरगु लोगों ने बताया कि जिस जगह डाक बंगला बना है, पहले उस जगह एक टीला था, जिस पर जूजू देवता की पूजा होती थी और जानवरों तथा मनुष्यों की बलि दी जाती थी। अंग्रेज जब आए तो उन्होंने उस स्थान को अनगढ़ मूर्तियों को उठाकर एक ओर फिकवा दिया—नरबलि बंद करा दी और डाक बंगला बनवा दिया। इस पर उस क्षेत्र का देव पुरोहित बहुत बिगड़ा और अंग्रेजों के चले जाने पर गाँव वालों को इकट्ठा करके बोला—डाक बंगले को जला दो और वहाँ फिर से देवता की पूजा आरंभ करो। भयभीत ग्रामवासी इसके लिए तैयार नहीं हुए। निराश पुरोहित क्रोध में उन्मत्त स्थिति में पागलों की तरह बड़बड़ाता और मंत्र पढ़ता हुआ, उस डाक बंगले के चारों ओर चक्कर लगाता रहा और अंत में एक रस्सी से उसी के बरामदे में फाँसी लगाकर मर गया, तब से अब तक उसी पुरोहित का प्रेत डाक बंगले में रहता है। कोई उधर जाने की हिम्मत नहीं करता। इससे पहले भी कोई अंग्रेज अफसर आया है और उसमें ठहरा है, तो उसे भी प्रेत ने रहने नहीं दिया है।

उस बंगले में ठहरने वाले यह अनुभव करते रहे हैं कि विचित्र प्रकार की दुर्गंध उस बंगले के कमरों से आती है। उस भीषण उष्ण क्षेत्र में जहाँ रात को भी लोग हाँफते रहते हैं। इस बंगले में कंपाने वाली ठंडक रहती है। बाहर हवा बिल्कुल ही बंद क्यों न हो, किंतु भीतर आँधी-तूफान उठते रहते हैं।

फ्रेंक हाइब्स ने इन सब बातों की जानकारी विस्तारपूर्वक प्राप्त की और जब उसे डाक बंगले के भुतहे होने का विश्वास हो गया तो भविष्य में किसी अफसर पर संकट न आए, यह ध्यान में रखते हुए, उसमें अपने सामने आग लगवा दी और वह जलकर धराशायी हो गया। कितने आश्चर्य की बात है कि अग्निकांड के साथ भविष्यवाणी भी सिद्ध हुई। पुरोहित जब आदिवासियों को डाक बंगला जलाने के लिए तैयार न कर सका, तो उसने इतना ही कहा—"अच्छा तुम मत जलाओ, पर देखना एक दिन वह किसी न किसी के द्वारा जलकर ही नष्ट होगा।" सचमुच उस डाक बंगले का अंत वैसा ही हुआ। विक्षोभ जब अंतःकरण में आँधी की तरह बहता है, तो यह मृत्यु के बाद भी सक्रिय रहता है।

इसीलिए विक्षोभ, उद्वेग की मनःस्थिति से बचकर रहने का शिक्षण-परामर्श विवेकशील मनीषी सदैव देते रहे हैं। धार्मिक शिक्षण का प्रयोजन ही व्यक्ति को सुख-शांति की जननी सुविकसित मनोभूमि का निर्माण स्वयं करने की प्रेरणा देना है। आक्रोश-आवेश की अधिकता सामाजिक और पारिवारिक जीवन को ही अस्त-व्यस्त नहीं कर देती, अपितु व्यक्ति चेतना में संस्कार रूप में घुसकर उसका पारलौकिक जीवन तक कष्टकारक बना डालती है। घृणा और रोष की स्थिति में मरने वाले अक्सर प्रतिपक्षी को कष्ट देते हैं, ऊपर की घटना में पुरोहित प्रेतलीला हटाने के कारण रुष्ट हुआ और उस आक्रोश में आत्महत्या कर बैठा। मरने के बाद भी वह शांत नहीं हुआ और उद्विग्न आत्मा उस टीले की जगह घने डाक बंगले को अपनी प्रतिहिंसा का केंद्र बनाए रही। ऐसे ही विक्षुब्ध प्रेतों का वर्णन लंदन के प्रसिद्ध टावर के संदर्भ में आता है।

सन् १८६४ की ठंड की रात्रि की एक घटना है। राजा की शाही रायफल कोर्प्स का एक संतरी विलियम पहरा दे रहा था। उसने टावर के बंद दरवाजे के मध्य से धुँधलके के मध्य एक सफेद आकृति को अपनी ओर आते देखा। उसने चेतावनी दी—"हाल्ट"। दो बार दोहराने पर भी वह रुकी नहीं और उसकी रायफल का वेयोनेट उस छाया के मध्य से निकल गया। यहीं विलियम बेहोश हो गया। जहाँ वह गिरा, यह वही स्थान था, जहाँ रानी 'एने बोलेन' को हेनरी-७ के समय में फाँसी दी गयी थी, कुछ दिनों बाद उस पहरेदार की मृत्यु हो गई।

हेनरी—८ भी उसी महल में रहे थे एवं यहीं पास में उन्हें दफनाया गया था। उनकी भयंकर आकृति अक्सर टावर में वहाँ के अधिकारियों ने घूमती देखी। इस समय ३० लाख पर्यटक हर वर्ष इस ऐतिहासिक टावर को देखने आते हैं। सन् १०७८ ईसवी से कई राजाओं व उनके परिवार का इतिहास इसी टावर से जुड़ा है। राजगद्दी के झगड़ों में इनमें से कई ने हत्याएँ की व कुछ ने आत्महत्या। इन सभी के प्रेत यदा-कदा किसी न किसी ने वहाँ देखे ही हैं। इन प्रेतों की शांति हेतु एक पादरी ने सन् १८५४ में एक ईसाई कर्मकांड भी किया। जिसके बाद घटनाओं में कुछ कमी तो आई, पर सिलसिला अभी जारी है।

भारतीय दर्शन की इस मान्यता के समर्थन में ऐसी अनगिनत घटनाएँ हैं, जो स्पष्ट करती हैं कि मनुष्य को इस जीवन में अपने आपको आकांक्षाओं, वासनाओं के अतिरेकी आवेग से मुक्त करने का प्रयत्न करना ही चाहिए, अन्यथा मरणोत्तर अवधि में भी ये कुसंस्कार और कुप्रवृत्तियाँ जीवन को भारभूत, निरानंद बनाए रखेंगी तथा व्यर्थ के भटकाव का कारण बनेंगी।



अत्यधिक मोह के कष्टकर परिणाम

*

भूत-प्रेतों के अस्तित्व संबंधी प्रचलित कथा-गाथाओं के संदर्भ में एक तथ्य सदा ही सामने आया है कि जिन व्यक्तियों को मरते समय अत्यधिक आवेश रहे हैं, उन्होंने उसी मनःस्थिति का परिचय अपने प्रेत-कलेवर में दिया है। जैसे धन या मकान से अत्यधिक प्यार करने वाले मरते समय, उन वस्तुओं से अत्यधिक मोह प्रकट करते हुए विलग हुए हैं, तो उनका प्रेत उन्हीं स्थानों के इर्द-गिर्द मँड़राता रहा है। जमीन में गढ़े हुए धन की उन्होंने चौकीदारी की है और यदि किसी ने उसे निकाल भोगा है, तो उसको तरह-तरह के त्रास दिए हैं। वस्तुओं का मोह उन्हें मरणोत्तर जीवन में कष्टकारक पहरेदारी के लिए विवश कर कैदी जैसा बनाए रखता है और उन वस्तुओं से मोह करने वाले अन्य देहधारी लोगों को भी इन अशरीरी-प्रेमियों का कोप भाजन बनना पड़ता है।

प्राण-चेतना अपनी संबंधित वस्तुओं के साथ चिरकाल तक जुड़ी रहती है और उनका मोह उन पर छाया रहता है; इसका प्रमाण मिश्र के पिरामिडों एवं कब्रों की उखाड़-पछाड़ करने वालों पर बीती घटनाओं से मिलती है। अध्यात्म विज्ञान के अनुसार प्राणी के अन्यत्र जन्म लेने या अन्य लोक को चले जाने पर भी उसकी विद्युत् शक्ति उन वस्तुओं का घेरा डालकर चिरकाल तक अपना आधिपत्य जमाए रहती है, जिनके साथ उसका मोह-अहंकार जुड़ा हो! भूत-प्रेतों का अस्तित्व प्रायः इसी स्तर का होता है। जीव के जन्म लेने के बाद भी लंबे समय उसकी छाया का प्रेत रूप में बने रहना संभव है।

अठारहवीं शताब्दी में अफ्रीका के बहुत बड़े भाग पर योरोपियन लोगों का अधिकार था। उन देशों के पुरातत्त्ववेत्ता इस बात के बहुत अधिक उत्सुक थे कि मिश्र के पिरामिडों तथा दूसरे मृतक स्मारकों के पीछे छिपे रहस्यों पर से पर्दा उठाया जाए।

इसलिए उन्होंने इस संदर्भ में काफी ढूँढ़-कुरेद की, खुदाई की और कितनी ही पुरानी कब्रों को उखाड़ा ?

इस कार्य में शोधकर्ताओं का एक उत्साही दल डॉ० ब्रेस्टेड के नेतृत्व में काम कर रहा था, उनके सहायक हार्वर्ड कार्टर, आर्थर बीगल, लार्ड कारनवर्ग आदि कितने ही मूर्धन्य पुरातत्ववेत्ता अपने-अपने ढंग से काम कर रहे थे। इन लोगों ने बहुत धन खर्च करके प्राचीन काल के अवशेषों को प्राप्त किया था और उस आधार पर प्राचीन काल की परिस्थितियों तथा मान्यताओं का पता लगाया था।

इसी संदर्भ में सन् १९२२ में 'तूतन खामेन' नामक स्थान से एक ऐसे वृद्ध फकीर की कब्र खोदी गई, जिसके संबंध में कितनी ही चमत्कारी दंत कथाएँ प्रचलित थीं। खुदाई का एक उद्देश्य उस क्षेत्र में फैले हुए अंधविश्वासों का निरस्त करना भी था।

कब्र खोद ली गई और उसके अवशेष भी प्राप्त कर लिए गए। अब उनका रासायनिक विश्लेषण होना आरंभ हुआ। इस बीच एक से एक बढ़कर आश्चर्यजनक और भयानक घटनाएँ घटित होना आरंभ हो गयी। डॉ० ब्रेस्टेड अपनी प्रयोगशाला में अवशेषों लकड़ी के टुकड़े का विश्लेषण करने के लिए एक बर्तन में कुछ रासायनिक पदार्थों के साथ उबाल रहे थे कि इतना भयंकर विस्फोट हुआ कि प्रयोगशाला की छत उड़ गई और दीवारें हिल गईं। इसी बीच एक काला सर्प शोधकर्त्ता कार्टर के घर जा धमका, वे स्वयं तो किसी प्रकार बच गये, पर उनकी पत्नी को उसने डस ही लिया और वह देखते-देखते मर गई। एक महीना बीता होगा कि लार्ड कारनवर्ग को नन्हें से मच्छर ने काटा और दो दिन के भीतर ही वे मर गये। मच्छर काटने का स्थान बिलकुल साँप के काटने जैसी स्थिति का बन गया था। इतना ही नहीं कारन वर्ग महोदय का हट्टा-कट्टा भाई भी उन्हीं दिनों दो दिन की मामूली बीमारी से चल बसा।

दल के प्रमुख ब्रेस्टेड कब्र खुदाने के दो सप्ताह के भीतर ही मर गए। अपनी पत्नी को गँवाकर भी कार्टर साहसपूर्वक अंधविश्वासों का खंडन करते रहते थे और शोध-कार्य को शिथिल नहीं पड़ने दिया था, पर न जाने क्या कुयोग उत्पन्न हुआ कि वे एक छोटी-सी तलैया में जा फँसे और उस कीचड़ में ही फँसे हुए असहाय स्थिति में मरे पाए गए, इस प्रकार वह पूरा शोधकर्त्ता दल ही समाप्त हो गया।

यह घटनाएँ मरणोत्तर जीवन के ठोस प्रमाण प्रस्तुत करती हैं और उनके लिए चुनौती देती हैं, जो शरीर के साथ ही जीवन का अंत होने की बात करते रहते हैं। साथ ही वस्तुओं से अत्यधिक मोह होने पर मृत्यु के बाद भी जीवात्मा के उन्हीं जड़ वस्तुओं के इर्द-गिर्द मोहाविष्ट होकर, मँड़राते रहने की दयनीय स्थिति को भी स्पष्ट करती हैं।

अमेरिकी और अंग्रेज मिलकर मिश्र की समाधियों की खोज कर रहे थे, खोज के पीछे मात्र पुरातत्त्व विषयक रहस्यों का जानना ही नहीं था, पर उनमें दबी हुई विपुल स्वर्ण-संपदा एवं रत्न-राशि से लाभान्वित होना भी था। इसके अतिरिक्त एक और भी बात थी, उन किंवदंतियों की वास्तविकता जानना जिनमें कहा जाता था कि इन समाधियों की रक्षा प्रेतात्मा करती है, जो उन्हें छेड़ेगा वह खतरा उठायेगा। एक समाधि पर तो स्पष्ट शब्दों में शिलालेख लगा था—"जो फराऊनी कब्रों को छेड़-छाड़कर मृतात्माओं की शांति भंग करेगा, उसे अकाल मृत्यु खा जाएगी।"

कब्रों की खुदाई का काम सबसे पहले लॉर्ड कार्नार्वल ने अपने हाथ में लिया था। उनका परिवार भी उस कार्य में दिलचस्पी ले रहा था और सहयोग दे रहा था। इसका भयंकर परिणाम सामने आया। एक-एक करके उस अभियान से संबंधित बाईस व्यक्ति कुछ ही समय के अंदर काल के गाल में बड़े विचित्र घटना-क्रम के साथ चले गए। लॉर्ड वेस्टवरी अनायास ही छत पर से कूद पड़े और मर गए। उनका बेटा जो खुदाई का इंचार्ज था। रात को

अच्छा खासा सोया, सुबह मरा हुआ पड़ा मिला। डॉ० अर्चिवाल्ड डगलस रीड एक ममी का एक्सरे कर रहे थे कि उनका हार्टफेल हो गया। आर्थर बाइगाल को मामूली-सा बुखार ही खा गया। आब्रेहर्वर्टन सहसा पगला गए और आत्महत्या कर बैठे। लार्ड कार्नार्वल की पत्नी लेडी एलिजाबेथ एक तुच्छ से कीड़े के काटने के बहाने से ही ढेर हो गई। इस प्रकार उनका पूरा कुटुंब ही नहीं सहकारी मंडल भी देखते-देखते अकाल मृत्यु का ग्रास हो गया।

यह प्रख्यात था कि नील नदी की घाटी में अवस्थित तूतन खामेन की समाधि सबसे अधिक रहस्यमय साथ ही सर्वाधिक संपत्ति से भरी-पूरी है। इसका लोभ खोजी लोग छोड़ नहीं पा रहे थे। यों इतनी मौतें देखते-देखते हो जाने के कारण सारे इंग्लैंड में आतंक छाया हुआ था और प्रतात्माओं की बात का मखौल उड़ाने वाले लोग भी आश्चर्यचकित होकर, इस प्रकार मृत्युएँ होने की बात को संयोग मात्र नहीं कह पा रहे थे। वे भी इच्छा न रहते हुए भी उन किंवदंतियों के आगे सिर झुका रहे थे, जिनमें समाधियों के साथ छेड़खानी करने वालों को जोखिम उठाने की चेतावनी दी जाती रही थी।

यह खुदाई मिश्र में पुरातत्त्ववेत्ता विभाग संभालने वाले विद्वान् हार्वर्ड कारटर ने इंग्लैंड के उत्साही धनपति लॉर्ड कानर्विन की साझेदारी में आरंभ कराई थी। इसका परिणाम कुछ अच्छा नहीं निकला। दोनों ही साझीदार समान रूप से क्षतिग्रस्त हुए। कारटर को भी जानमाल की भारी क्षति उठानी पड़ी।

● नगाड़े की चोट और पैसे की थाप

रॉयल सोसाइटी के फैलो जोसफ ग्लैनविल इंग्लैंड के प्रामाणिक और सम्मानित नागरिक थे। उन्होंने अपने संस्मरणों में सन् १६६२ में घटित हुए एक प्रेत अस्तित्व की घटना का उल्लेख किया है। उनके कथानुसार इंग्लैंड के विल्ट शायर स्थान में नियुक्त एक न्यायाधीश की अदालत में आए एक विचित्र केस का वर्णन है। एक अर्ध-विक्षिप्त-सा व्यक्ति कहीं से पुराना नगाड़ा खरीद लाया। वह

उसे सड़क पर खड़ा होकर, विचित्र ढंग से बजाता, भीड़ इकट्ठी करता और पैसे बटोरता। पुलिस ने उसे रास्ता रोकने और अवांछनीय भीड़ जमा करने के अपराध में पकड़कर नगाड़े समेत अदालत में पेश किया। अदालत ने उसे चेतावनी देकर छोड़ दिया और नगाड़े को जब्त का हुक्म दिया। कुछ दिन बाद बेकार पड़े नगाड़े को पुलिस ने उस मजिस्ट्रेट के घर ही पहुँचा दिया। वहाँ उसे घर के एक कौने में पटक दिया गया।

जिस दिन से नगाड़ा उनके घर पहुँचा उसी दिन से वहाँ प्रेतों के उपद्रव शुरू हो गये। किवाड़ों को खटखटाने की, छप्पर पर धमा-चौकड़ी और आँगन में उछल-कूद होने की घटनाएँ निरंतर होने लगीं। बहुत तलाश करने पर भी कोई दिखाई न पड़ता था, पर घटनाएँ बराबर होती थीं। स्वयं प्रयत्न करने और नौकरों, पड़ौसियों की सहायता लेने के बाद भी जब उस उपद्रव का समाधान न हो सका, तो पुलिस की सहायता ली गई, पर वे लोग भी देखते, सुनते तथा समझते हुए भी कुछ कर न सके। जो दिखाई ही नहीं देता उसको रोका या पकड़ा कैसे जाए ?

एक दिन मजिस्ट्रेट ने देखा कि किसी मजबूत आदमी ने जोर का धक्का देकर किवाड़ें खोल लीं, चटखनी टूट गई और वह व्यक्ति ओवरकोट पहने हुए घर में भीतर घुसता चला आया और आंगन में होता हुआ जीने के रास्ते छत पर चढ़ गया। आश्चर्य यह था कि ओवरकोट तो आँखों से दीख रहा था, पर पहनने वाले के हाथ-पैर, चेहरा आदि सभी नदारत था। लगता था अकेला कोट ही यह सब हरकतें कर रहा था। इस घटना के बाद तो एक प्रकार से इन उपद्रवों को प्रेतात्मा की करतूत ही मान लिया गया।

अब यह तलाश किया जाना था कि आखिर थोड़े ही दिनों से यह उपद्रव क्यों खड़े हुए, इससे पहले क्यों नहीं थे ? घर में कुछ अजनबीपन तो नहीं हुआ। इस ढूँढ़-खोज में जब्त किया गया वह नगाड़ा ही नजर आया, जो एक पगले से छीना गया था और उसने भी किसी कबाड़खाने से खरीदा था। नगाड़ा हटाया गया था, साथ

ही उन उपद्रवों का भी अंत हो गया। इतना ही नहीं उस पगले का भी पता लगाया गया तो पता चला कि वह सदा से ही विक्षिप्त नहीं था। सस्ता माल देखकर कबाड़खाने से वह उस नगाड़े को खरीद लाया था। जिस दिन से उसे लाया वह पगला गया और शोर मचाने, भीड़ इकट्ठा करने की करतूतें करने लगा। जिस दिन से नगाड़ा जब्त हुआ, उसी दिन से वह सामान्य, स्वाभाविक स्थिति में पहुँच गया, जिस दिन नगाड़ा हटाया गया, उसी दिन से मोक्सन के घर में भी शांति आ गई।

समझा गया कि उस नगाड़े के असली मालिक की प्रेतात्मा अपनी प्रिय वस्तु के साथ चिपकी रही है और वह वस्तु जहाँ कहीं भी पहुँची है, वहीं उस आत्मा ने भी प्रवेश पदार्पण किया है।

सत्रहवीं सदी के पादरी जेरेन्सी टेलर ने अपनी एक स्मरणीय पुस्तक में एक प्रेतात्मा का आँखों देखा विवरण लिखा है। जब पादरी घोड़े पर सवार होकर वेटफास्ट से डिल्सगेरो जा रहा था तो कोई अजनबी व्यक्ति सहसा उसके पीछे घोड़े की पीठ पर सवार हो गया। चकित पादरी ने उसका परिचय एवं उद्देश्य पूछा तो उसने अपना नाम हैडकजेम्स बताया और कहा आप मेरी विधवा पत्नी तक यह संदेश पहुँचा दें कि उसका नया पति जल्दी ही उसके साथ धोखा करने वाला है। वह बचे। पादरी ने बताते हुए नाम पते पर वह संदेश पहुँचा दिया, पर स्त्री ने उस बात पर न तो ध्यान दिया और न विश्वास किया।

कुछ दिनों बाद उस स्त्री का खून हो गया। हत्या का मुकदमा कैरिकफोरेंस की अदालत में चला। पुलिस को संदेह था कि यह हत्या उसके नये पति ने पत्नी की संपत्ति हड़पने के लिए की है, इस संदर्भ में पादरी जेरेंसी टेलर ने भी अपनी प्रेत वार्ता की साक्षी प्रस्तुत की।

पादरी की गवाही प्रामाणिक नहीं समझी गई और अदालत द्वारा कहा गया कि यदि ऐसी बात है कि मृतात्मा को अदालत में उपस्थित होकर, अपनी बात कहनी चाहिए। सर्वत्र सन्नाटा था। अचानक जोर से बिजली कड़कने जैसी आवाज हुई। अदृश्य से

एक हाथ निकला और उसने अदालत में मेज पर तीन बार जोर-जोर से थपकी दी। इस दृश्य को देखकर न्यायाधीश एवं सभी आतंकित हो गये। अदालत ने दूसरे पति डेवीज को अपराधी घोषित करते हुए उसे समुचित दंड दिया।

मृतात्मा के प्रिय पदार्थों को दान कर देने अथवा अन्यत्र कहीं स्थानांतरित कर देने का प्रचलन इसी दृष्टि से है कि उसे अन्यत्र जन्म लेने या विकास-क्रम के अनुरूप आगे बढ़ने में अड़चन न पड़े। प्रिय वस्तुओं में उलझा रहने के कारण आत्मा अशांत और उद्विग्न ही रह सकता है। जिस प्रकार घर के संबंधी मृतक का अभाव अनुभव करके दुःखी रहते हैं, उसी प्रकार वह जीव भी बार-बार अपनी प्रिय वस्तुओं एवं परिस्थितियों के इर्द-गिर्द मँडराता रहकर दुःखी हो सकता है। वहीं डेरा डालकर बैठा रह सकता है और उस उपस्थिति से घर-परिवार के लोगों को असुविधा अनुभव हो सकती है। इसलिए अच्छा यही समझा गया कि उन वस्तुओं को अन्यत्र स्थानांतरित कर दिया जाए। दान में देकर आत्मा को यह विश्वास दिला दिया जाए कि वे पदार्थ अब परिवार के आधिपत्य में नहीं रहे, वरन् किसी धर्म सत्ता के अधिकार में चले जाने के कारण पराये हो गए। मृतक की वस्तुओं का दान करने का एक कारण यह भी है कि घर के लोग उन्हें देख-देखकर शोक-संतप्त रहने की कठिनाई से बच जाएँ और विस्मृति अपनाकर, अपना मन जल्दी हल्का कर सकें।

जो हो, इतना निश्चित है कि शरीर के साथ आत्मा का अंत नहीं हो जाता। यदि आत्मा अधिक भावुक या मोहग्रस्त है तो उसे प्रेतात्माओं के रूप में संबंधित पदार्थों तथा व्यक्तियों से मोह बना रह सकता है। यह मोह मृतात्मा की प्रगति और कुटुंबियों की सुविधा की दृष्टि से अवांछनीय है। इसलिए अंत्येष्टि संस्कार के साथ इस प्रकार के धर्मोपचार जोड़े गये हैं, जिससे आत्मा का मोह एवं शोक शांत हो सके उसे अन्यत्र जन्म लेने का अवसर मिल सके।



आत्मा के अस्तित्व का प्रमाण भूत

*

यदि उसे अंध-विश्वास न बनाया जाए, तो भूत और प्रेतों का अस्तित्व यह साबित करेगा कि आत्मा का स्वतंत्र अस्तित्व है, एक अवस्था विशेष होती है, जब आत्मा अपनी नितांत शुद्ध अवस्था प्राप्त कर परमात्मा स्वरूप हो जाती हैं, किंतु जब तक पाप, इच्छाएँ, ममता, वासनाएँ आदि विकारों की परत उस पर चढ़ी रहती हैं, उसका स्वतंत्र अस्तित्व बराबर कायम रहता है।

विज्ञान और प्रत्यक्षदर्शी इन उक्तियों को मानने के लिए तैयार नहीं। उनका कहना है कि मृत्यु के बाद जीवात्मा का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। शरीर के सभी रासायनिक पदार्थ रूपांतरित होकर शारीरिक सत्ता को बिगाड़ देते हैं, फिर कुछ नहीं रहता।

किंतु उनके लिए भूत एक चुनौती है, भूत को लेकर माना अंध-विश्वास भी खूब फैला है, तो भी वह सब इसी प्रकार चिर सत्य की नकल भर है। ऐसे प्रामाणिक उदाहरण भी हैं, जिन्होंने भूत पर कभी विश्वास नहीं किया तो भी उन्हें उस संपर्क में आना पड़ा। कुछ घटनाएँ ऐसी भी घटित हुईं, जिनमें न कोई अंध मान्यता थी न भ्रम, उन घटनाओं ने पाश्चात्य जीवन में भी भूत की मान्यता को जीवित कर दिया।

१९४५ में द्वितीय महायुद्ध के समय केंटोर नामक व्यक्ति को एक बार अमरीका से लंदन जाना पड़ा। रास्ते में एक रात वे केसिंगटन में रुके। उन्हें बोर्डिंग हाउस का एक कमरा सोने के लिए दिया गया। रात्रि में उन्हें जो अनुभव हुए, उसका वर्णन उन्होंने स्वयं इन शब्दों में लिखा है—

'भोजन करने के बाद मैं सो गया। पहली नींद ३ बजे टूटी। मैं उठा और लघुशंका के लिए कमरे से बाहर गया और फिर लौट कर आया और बिस्तर पर लेट गया। लेटते देर नहीं हुई थी कि ऐसा लगा कि नीचे से कोई मेरे कंबल को घसीट रहा है। पहले तो

मैंने सोचा कपड़े अपने आप खिसक रहे होंगे, इसलिए उन्हें ऊपर को खींच लिया, किंतु वही क्रिया दुबारा हुई। मेरा मुँह फिर खुल गया इस बार थोड़ी ताकत लगाकर कपड़े फिर ऊपर उठाए। जितनी देर कपड़े ऊपर उठाए रहा कपड़े ठीक रहते, पर छोड़ते ही उन्हें फिर कोई खींच लेता। बाहर उठकर देखा, कोई नहीं था। कमरे की बत्ती जलाकर कोना-कोना देखा, कोई नहीं था। दरवाजे बंद करके, कपड़े चारों ओर से लपेटकर फिर लेट गया। लेटना था कि कमरे में एक विचित्र प्रकाश दिखाई दिया। उसमें अजीब तरह की हलचलें हो रही थीं। हँसने और रोने की विचित्र आवाजें भी आती रहीं। मैंने शेष रात बड़ी बेचैनी से काटी।

इस घटना का नायक केंटोर कोई साधारण और अविश्वस्त आदमी नहीं अमेरिका का प्रसिद्ध लेखक हैं, जिन्हें कुछ दिन पहले ही 'पुलित्जर पुरस्कार' प्रदान किया गया है।

अब्राहम क्यूमिंग्ज १८वीं सदी के अंतिम चरण से उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक क्रियाशील एक पादरी थे। सन् १८२६ में उन्होंने एक किताब छपवाई। ७७ पृष्ठीय इस पुस्तिका का नाम है, 'इम्मार्टलिटी प्रूव्ड बाइ द टेस्टीमोनी ऑफ साइंस'। इसमें एक कप्तान बटलर की मृत पत्नी की प्रेत छाया के बारे में प्रामाणिक विवरण है। इस ग्रंथ की मूलप्रति 'न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी' में सुरक्षित है। पादरी क्यूमिंग्ज ने इस पुस्तिका में ३० व्यक्तियों की शपथपूर्वक की गई घोषणा छापी है कि उन्होंने उस मृतात्मा को देखा व सुना था। स्वयं पादरी ने उसे कई बार देखा व सुना है।

अमेरिका के कैलीफोर्निया शहर के इंडावरी मुहल्ले में एक भुतहा मकान था। वहाँ कोई भी रहने को तैयार न होता। चार साहसी छात्रों ने एक बार उसे किराए पर लिया। वे भूतों-प्रेतों की मान्यता को निरी भ्रांति मानते थे, पर एक दिन सहसा आँगन में कुर्सियों पर बैठे-बैठे, उन्होंने पाया कि उनकी कुर्सियाँ वायु में ऊपर उठकर ७-८ फुट की ऊँचाई पर स्थिर हो रहीं। फिर एक रात सहसा पत्थर वर्षा होने लगी। खोजबीन से मालूम हुआ, वहाँ एक

डॉक्टर ४-५ वर्ष पूर्व आत्महत्या कर चुका था, उसी की प्रेतात्मा का करिश्मा है। छात्रों ने मकान छोड़ दिया।

धर्मयुग में श्री दामोदर अग्रवाल ने भी ऐसी ही एक आपबीती ही सुनाई। उनके घर में सफाई के बावजूद दुर्गंध आने, अल्मारी में ताले में बंद पूरियाँ रात को गायब हो जाने और ताला ज्यों का त्यों बंद रहने, धुले बर्तन सुबह जूठे मिलने, आँगन में रखे लड्डुओं की जगह गीली मिट्टी बची रहना, मिठाइयों के रात भर में सड़ जाने, रसोईघर में अजनबी पंजों के निशान अंकित होने और दीवारों आदि पर उंगलियों के चिह्न दिखने तथा दूध का भरा गिलास पल भर में गायब होने की घटनाएँ घटती थीं।

नवनीत (हिंदी डाइजेस्ट) में भी एक घटना छपी थी। अमेरिका के श्री रोजेनहीम एडवोकेट के घर में सहसा टेलीफोन की घंटियाँ टनटना उठतीं, ट्यूबलाइट बिना स्विच दबाए जल उठतीं, बल्ब जलकर फट जाते, टेलीफोन पर उठाने पर गोलियों की बौछार सुनाई पड़ती। लगातार छानबीन व चौकसी के बावजूद शरारती व्यक्ति का पता न चला।

'फ्रीवर्ग इन्स्टीट्यूट ऑफ पेरासाइकोलोजी' के अध्यक्ष परामनोवैज्ञानिक प्रो. हांस बेंडर ने मामले की पड़ताल की और पाया कि मामला 'साइकोकाइनेसिस' यानी मनोगति क्रम का है। मनोगति क्रम का अर्थ है, ऐसी सूक्ष्म मानसिक शक्तियाँ, जो भौतिक पदार्थों को नियंत्रित-निर्देशित कर सकें। प्रो. बोंडर के अनुसार भूत-प्रेत के रूप में भी ऐसी मानसिक अवस्था संभव है।

एक बार एक फोटोग्राफर ने 'डॉ० थयोव वरहाजमान' का एक फोटो खींचा। जब फोटो खींच लिया गया तो डॉ० वरहाजमान ने कहा—मुझे ऐसा लगा कि जैसे फोटो खींचते समय कोई मेरे साथ हो, जबकि उनके साथ कोई भी दृश्य प्राणी खड़ा हुआ न था। लेकिन दूसरे दिन जब फिल्म धुलकर आई तो लोग यह देखकर दंग रह गये कि इस फोटो के साथ ही स्वर्गीय ग्लेडस्टोन का भी फोटो आ गया था।

किरायेदार ने सोचा मकान बहुत बढ़िया है, यहाँ बहुत अच्छा रहेगा और नहीं तो यह मकान मोल ही ले लूँगा। इन्हीं कल्पनाओं में खोया हुआ किरायेदार विलियम फ्रांक गहरी निद्रा में सो गया। किंतु अभी उसे सोए हुए एक घंटा भी नहीं हुआ था कि किसी ने हाथ के इशारे से उसे जगा दिया। फ्रांक ने चद्दर हटाया देखा एक बहुत ही भयंकर हरी आँखों वाली आकृति उसके सामने खड़ी है। उसने पूछा—कौन है ? किंतु जैसे यह प्रश्न हवा में खो गया उसी प्रकार पता नहीं चला, वह छायाकृति एकाएक कहाँ अंतर्धान हो गई ?

फ्रांक उठे बत्तियाँ जलाकर सभी दरवाजे खिड़कियों की जाँच की, सब बिलकुल बंद थे। बाहर से चिड़ियाँ तो आ सकती थी, किंतु बिल्ली नहीं धँस सकती थी, फिर यह पूरी दानवाकृति कहाँ से आई, कौन थी वह, कहाँ चली गई ? उन्होंने निश्चय किया यह मेरे अवचेतन मन की कल्पना थी, जिसने स्वप्न में विधिवत एक मनुष्य की आकृति खड़ी कर दी। मन को आश्वस्त कर फ्रांक फिर सो गये किंतु जैसे ही आधी रात नियराई, एक बार फिर वही पहले जैसी स्थिति। ठीक वह शकल फिर सिरहाने खड़ी थी और फ्रांक को झकझोरकर जगा रही थी। फ्रांक के मुँह से कौन तो निकला—उस कौन के साथ एक कराह-सी मालूम पड़ी, उन्होंने स्पष्ट खड़े हुए एक आदमी को देखा, किंतु जैसे ही उन्होंने फिर बत्ती जलाई वहाँ न राम न रहीम। फ्रांक बुरी तरह घबड़ा गए। रात जागते बिताई; जहाँ उस मकान को वे खरीदने की सोच रहे थे। दूसरे दिन ही छोड़कर भाग गए।

यह कोई गल्प-कथा नहीं लिखी जा रही वरन् एक सच्ची घटना है, जो सिडनी (आस्ट्रेलिया) शहर की हेयर फोर्ड स्ट्रीट के एक मकान में घटित हुई, जिसकी जाँच मनो-वैज्ञानिकों ने भी की और सच पाया। उन्होंने माना कि अदृश्य जगत् में यक्ष-गंधर्व, ब्रह्म राक्षस, भूत-प्रेत, पिशाच, बेताल, किन्नर आदि होने की भारतीय मान्यता निराधार नहीं है।

फ्रांक के जाने के बाद एक अन्य सज्जन पधारे। मकान किराए पर ले लिया। उस समय मुहल्ले वालों ने बताया—श्रीमान् जी ! इस

मकान में एक किरायेदार पहले भी आये थे, पर वह इन-इन परिस्थितियों में मकान छोड़ गए। कह नहीं सकते आपका मकान लेना हितकर होगा अथवा नहीं, पर सुना यह जाता है कि इस मकान का मालिक जो चाय पीने का बेहद शौकीन था। शराब और मांस तो उसके लिये जल पीने की तरह थे। सदैव दुर्गंधित शरीर वाले उस दानवाकृति मकान मालिक ने शरीर छोड़ा, तब से इस मकान में कोई टिका नहीं। कहते हैं—उसकी आत्मा इसी मकान में चक्कर काटती है। कोई और मनुष्य उस घर में रहे, यह उससे बर्दाश्त नहीं होता। उसके रिश्तेदार चाहते हैं कि मकान का कुछ किराया मिले, पर यह अदृश्य भटकती हुई आत्मा किरायेदारों को रहने नहीं देती।

मकान उन्होंने ले लिया और उसी दिन सामान लाकर जम भी गए। इसे अंतर्चेतना की कमजोरी कहा जाए अथवा एक प्रकट सत्य कि उन सज्जन की पहली और दूसरी दो रातें तो अच्छी तरह गुजर गईं, किंतु तीसरी रात जैसे ही कोई एक बजने को हुआ कि उन्हें किसी ने कंधे झकझोर कर जगा दिया। इतनी तेजी से जगाया गया था कि नींद तड़फड़ाकर टूट गई। उन्होंने देखा एक कोई बहुत ही भारी भरकम शरीर का व्यक्ति सामने खड़ा है, उसकी आँखें हरी थीं और शरीर काली छाया जैसा। देखते ही पहला हाथ बत्ती के स्विच पर गया। बत्ती जलने पर उन्होंने चारों तरफ दृष्टि दौड़ाई, तो दिखाई कोई नहीं दिया, पर उनका अविश्वासी मन इतना डर गया कि अच्छी तरह बोलना भी कठिन था। जिन्हें पहले से ही अतींद्रिय अस्तित्व पर विश्वास होता है, वे यह भी जानते हैं कि ऐसी उच्छिष्ट आत्माएँ अपने आप अभिशाप होती हैं, वे दूसरों का कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं ? जिनमें कुछ ऐसी क्षमता होती भी है, वह देव श्रेणियाँ होती हैं और अहित सोचने की अपेक्षा मनुष्य का हित ही करती हैं। शंकालु मन उक्त सज्जन को इन सब बातों का कोई पता न था, सो उस रौद्र-कल्पना ने उन्हें इतना डरा दिया कि वे भी शेष रात सो नहीं सके। दूसरे दिन वे भी वहाँ से सादर विदा होकर दूसरे घर में चले गए।

घटना सिडनी पुलिस हैड क्वार्टर के रिकार्ड से उद्धृत की जा रही हैं। जिसको यह विलक्षण रिपोर्ट इस तीसरी घटना से प्राप्त हुई। इस बार माइकेल बुक्स नामक एक अन्य सज्जन आए और यही मकान किराए पर लेकर रहने लगे। उनसे किसी ने कुछ कहा भी नहीं। उन्हें या उनके परिवार को कभी इस बात की कल्पना भी नहीं थी, उनका अपना कोई विश्वास भी नहीं था। किंतु एक रात की बात है कि कोई आहट पाकर उनकी कन्या जग गई और नेत्र खोलते ही जो भयंकरता, उसने देखी सो आँखें खुली की खुली रह गईं। अच्छी स्वस्थ सुंदर कन्या की आँखों ने झपकना बंद कर दिया और कोई भी चिकित्सक उसे ठीक नहीं कर सका। उस आकृति का जो भी दृश्य इस कन्या ने बताया वह पहले दो किरायेदारों के विवरण से सौ-फीसदी मिलता-जुलता था।

इसके बाद एक दिन श्रीमान् कुक के साथ भी ठीक वैसी ही घटना घटित हुई। श्री कुक उसे देखकर न केवल चीख उठे वरन् रोने भी लगे। उन्होंने उसे बिस्तर उठाकर फेंकते हुए देखा। एक दिन उन्होंने पूरी केतली चाय बनाकर रखी थी। किसी काम से वे थोड़ा बाहर निकलकर आए, दुबारा जब फिर चाय पीने के लिए आए तो यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि वही आँखों वाला वीभत्स छाया पुरुष केतली में मुँह लगाए चाय पी रहा है। कहीं एक बूँद चाय गिरी नहीं. फिर चाय का इस प्रकार देखते-देखते वायुभूत हो जाना एक बहुत रोमांचक घटना थी। उन्होंने कई बार उसे सेवकों की तरह काम करते भी देखा और कई बार स्वयं बाहर खुला हुआ रखा सामान उठाकर खाते हुए भी देखा। श्री कुक ने भी अंततः सपरिवार मकान छोड़ दिया, पर चलते-चलते उसकी रिपोर्ट भी पुलिस हैड-क्वार्टर में लिखा गए ताकि पीछे और कोई उसमें आकर तंग न हो।

पुलिस ने जाँच का निश्चय किया। एक पुलिस कॉन्स्टेबल जाँच के लिये भेजा गया। सिपाही ने घूम-घूमकर पूरा बँगला देखा, पर वहाँ उसे न कोई आकृति दिखी न छाया। सिपाही ने कुक को कई बार कोसा और कहा—लोगों को पुलिस को तंग करते मजा-सा आता है।

उसने मकान में ताला बंद किया और थाने लौटकर पुलिस सुपरिटेंडेंट को बताया वहाँ कुछ भी तो नहीं है। दूसरे दिन आफिसर ने उसी सिपाही को फिर भेजा। इस बार सिपाही ताला खोलकर घर में प्रविष्ट हुआ, तो उसने जो देखा उसके रोंगटे खड़े हो गये। कमरों का सारा सामान अस्त-व्यस्त पटका पड़ा था। करीने से लगी कुर्सी मेजें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। रसोईघर में उसे केतली में चाय मिली, जिसे देखने से लगता था किसी ने अभी हाल चाय बनाकर पी है। मकान में चारों तरफ तालाबंदी थी। कोई आने-जाने का रास्ता नहीं फिर अंदर कौन आया किसने चाय बनाई ? अभी वह इन्हीं विचारों में खोया हुआ पीछे को मुड़ा ही था कि ठीक वही आकृति उसके सामने खड़ी थी। पुलिस कॉन्स्टेबल के शरीर से पसीना फूट पड़ा। बड़ी मुश्किल से बेचारे ने भागकर दरवाजे बंद किए, ताला लगाया और थाने लौट आया। थाने में सही घटना लिखाकर घर लौटा तो डर के मारे उसे बुखार ही आ गया और वह पंद्रह दिन बाद ठीक हुआ।

इसके बाद सीनियर पुलिस अफसरों तथा सी. आई. डी. कर्मचारियों ने भी छानबीन की। कई ने तो वह आकृति ज्यों की त्यों देखी भी पर जिन्होंने उसे देखा भी नहीं, उन्होंने भी मकान का सामान कई बार अदल-बदल कर रखकर जाँच की। बाहर पहरा होने के बावजूद सामान किस प्रकार तितर-बितर हो जाता है ? यह रहस्य कोई भी सुलझा नहीं सका। मनोवैज्ञानिक तथा पत्रकारों ने भी न्यू कैसल में रह रहे माइकेल कुक से बातचीत की तथा मौके पर जाकर जाँच भी की। सारे तथ्य सही पाए और सबने एक स्वर से यह माना कि कोई ऐसी सत्ता सचमुच है, जो नितांत स्थूल न होकर भी समर्थ मनुष्य जैसे काम कर सकने में सक्षम है। यदि यह सत्य है तो आत्मा के अस्तित्व की, मानवेतर जीवन और पुनर्जन्म की भारतीय मान्यताएँ निराधार नहीं कही जानी चाहिए वरन् उस मान्यता के महत्त्वपूर्ण पहलुओं का वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिए। जब तक विज्ञान इस तरह के रहस्यों

का उत्तर नहीं देता, तब तक अतींद्रिय अस्तित्व से इनकार करने का कोई कारण नहीं होना चाहिए।

कहते हैं कि इस मकान में पहले एक वृद्धा रहती थी, जो घर के अंदर किसी से जोर-जोर से बातचीत किया करती थी। कभी-कभी उसका स्वर इतना रोबीला और आदेशपूर्ण होता था मानो वह अपने किसी नौकर से काम करा रही हो। इतना होने पर भी उस व्यक्ति को किसी ने कभी देखा नहीं। कभी किसी ने वृद्धा से पूछा—अजी आप किससे बातें किया करती हैं ? तो वह हँसकर इतना ही उत्तर देती—बेटा ! जिससे मैं बात कर सकती हूँ, तुम्हें तो उसके देखने की हिम्मत भी नहीं हो सकती। वृद्धा के आत्मबल पर लोग आश्चर्य करते और कहा करते कि जिसके कारण दूसरे लोग मकान में रह भी नहीं पाते, उसे बुढ़िया कैसे नाच नचाती है ? वह इन दिनों बीमारी के कारण अस्पताल में थी, तब अन्य किरायेदार आए और यह बात असली रूप में सामने आई। घटना सामने आ जाने पर भी अव्यक्त-सी है और उसके गर्भ में सैकड़ों यथार्थ सिद्धांत छिपे हुए हैं, जिन्हें जाने समझे बिना मनुष्य जीवन की यथार्थता को समझ पाना कठिन है।

● ह्वाइट हाउस में मरणोत्तर जीवन

टेलिविजन सेट आन (चालू) हुआ और राष्ट्रपति ट्रूमैन अपनी पुत्री मार्गरिट से बातचीत करने लगे—अनुमान से सर्वथा भिन्न दिशा का संदर्भ—ट्रूमैन कहने लगे—"एक दिन रात के लगभग तीन बज रहे थे, जिस कमरे में हम सो रहे थे, किसी ने दस्तक दी। बिस्तर से उठकर द्वार खोले तो जो दृश्य दिखाई दिया, उससे तो मैं विस्मित और अवाक् ही रह गया। मैंने देखा—भूतपूर्व राष्ट्रपति लिंकन का भूत सामने टहल रहा है। आगे बढ़ने का साहस नहीं हुआ, द्वार बंद किए और बिस्तर पर आ लेटा।"

घटना उनके राष्ट्रपति काल की ही है और है भी ह्वाइट हाउस की ही। प्रायः सभी अमेरिकी राष्ट्रपति अपनी संवेदनशीलता,

परिश्रमशीलता, साहस और उद्यमशीलता के लिए सदैव सारे संसार के आकर्षण बिंदु रहे हैं। हजारों लोगों ने उनसे अपनी-अपनी तरह की प्रेरणाएँ ग्रहण की हैं, पर बहुत कम लोग होंगे, जो १८ एकड़ में बने इस भव्य प्रासाद, "ह्वाइट हाउस" जिसमें अमेरिका का हर राष्ट्रपति निवास करता है, के संबंध में कुछ ऐसे कथ्य व तथ्यों से परिचित होंगे, जो मनुष्य की चिंतन की दिशाओं को बलात् एक अंतरंग मरणोत्तर जीवन की ओर खींच ले जाते हैं। यह भी एक विलक्षण बात है कि सारे अमेरिका में ह्वाइट हाउस को मरणोत्तर अस्तित्व का प्रमाण माना जाता है, जबकि वहाँ की सभ्यता से प्रभावित अन्य देशों में लोगों का विश्वास है कि मृत्यु के पश्चात् जीवन का कुछ भी अस्तित्व शेष नहीं रहता है।

मन में दुर्बलता न आए, भय पैदा न हो इस दृष्टि से भूत-प्रेत का चिंतन न करें, यह किसी हद तक ठीक भी है, किंतु अधिकतम सौ वर्ष के जीवन के भौतिक सुख-चिंतन में पड़कर करोड़ों-अरबों वर्षों से भी अधिक शाश्वत एवं अनंत अंतरंग जीवन की उपेक्षा आत्मा के लिए कभी भी हितकारक नहीं की जा सकती ? भूत है तो क्यों ? उसका स्वरूप क्या है ? यदि ह्वाइट हाउस के ऐसे प्रभावशाली और विशिष्ट व्यक्ति मानते हैं कि मृत्यु के बाद भी जीवन का अस्तित्व बना रहता है, तो यह जानना ही चाहिए कि वह क्यों बना रहता है और क्या उस स्थिति में भी आत्मा सुख-शांति की अनुभूति कर पाती होगी ? जो कि मनुष्य जीवन का यथार्थ लक्ष्य है।

ह्वाइट हाउस की यह घटनाएँ दिलचस्प ही नहीं गंभीर भी हैं। एक बार हालैंड की महारानी विल्हेल्मिना ने अमेरिका का भ्रमण किया, तब वे विशिष्ट सम्मानित अतिथि के रूप में ह्वाइट हाउस में ही ठहराई गईं। एक दिन उनके कमरे के दरवाजे को किसी ने खटखटाया। उन्होंने दरवाजा खोला तो देखा सामने काली छाया के समान अब्राहम लिंकन का भूत खड़ा है। अब्राहम लिंकन की हत्या की गई थी। वे महान् व्यक्ति थे, जब वे राष्ट्रपति थे, तब भोग- विलास और ऐश्वर्य की उन्हें कोई कमी क्यों रही होगी ? फिर उनका भूत क्यों ? भारतीय

दर्शन के अनुसार उनमें आसक्ति का भाव रहा होगा, उसी से उनकी आत्मा ह्वाइट हाउस को छोड़ना नहीं चाहती होगी। ठीक इसी समय भौतिक विज्ञान की इस मान्यता का भी खंडन हो जाता है कि जीवन की चेतना रासायनिक है। यदि जीवन विद्युत्, चुंबक आदि के समान कोई स्थूल और रासायनिक चेतना होती है, तो लिंकन की मृत्यु के बाद उनका अस्तित्व क्यों बना रहता ?

श्रीमती विल्हेल्मिना ने उस समय के राष्ट्रपति रूजवेल्ट से उस घटना का जिक्र किया, तो वे बोले—मैडम ! हम तो लिंकन के कारण पहले ही परेशान रहे हैं, अब जो मेरी पत्नी का अध्ययन कक्ष है, वह पहले सोने का कमरा था, पर लिंकन का भूत हमेशा उसी कमरे में आता रहता, इसी कारण अपनी पत्नी की इच्छानुसार उसे बदलना पड़ा। कुमारी मेरी नामक सेक्रेटरी ने भी लिंकन को कई बार कई मुद्राओं में देखा, हम कह नहीं सकते यह सब क्या है ? इन भूतपूर्व राष्ट्रपतियों को मृत्यु के बाद भी ह्वाइट हाउस से क्यों लगाव बना रहता है ?

राष्ट्रपति क्वीवलैंड की पत्नी ने राष्ट्रपति भवन में एक बच्चे को जन्म दिया था। बच्चा कुछ ही दिन में चल बसा था। उस बच्चे से संभवतः उनका मोह मृत्यु के बाद भी नहीं छूटा था, इसी कारण उनकी आत्मा भी ह्वाइट हाउस में लिंकन की तरह ही भटकती है। उनकी विचित्र प्रकार की चीख कई बार सुनी गई। राष्ट्रपति निक्सन की पत्नी के मन में एक बार ऐसा हुआ कि गुलाब के बगीचे का स्थान बदल दिया जाए, तो उससे राष्ट्रपति भवन की सुंदरता और भी बढ़ जाएगी। एतदर्थ उन्होंने माली को बुलाकर कहा—इस बगीचे का स्थान बदल दो। गुलाब का यह बाग राष्ट्रपति मैडीसन की धर्मपत्नी ने लगवाया था। ह्वाइट हाउस में किसी परिवर्तन या नई व्यवस्था का अधिकार राष्ट्रपति की पत्नी को ही होता है। जब माली बगीचे के पास आया, तो वह वहाँ खड़े हुए श्रीमती मैडीसन के भूत को देखकर घबरा उठा। लौटकर उसने सारी बात श्रीमती विल्सन से कही। विल्सन भूत-प्रेतों पर

विश्वास नहीं करती थी, पर उन्होंने स्वीकार किया जब मैं बगीचे के पास स्वयं गई तो श्रीमती मैडीसन का भूत वहाँ था, मुझे ऐसा लगा कि वह कह रही हैं कि यदि यह बगीचा बदला तो भला न होगा डरकर श्रीमती विल्सन ने अपनी सारी योजना रद्द कर दी।

वहाँ के सभी लोग यह मानते हैं कि कुछ एक राष्ट्रपतियों को छोड़कर प्रायः सभी की रूहें अब भी वहाँ विद्यमान हैं और यही कारण है कि जब भी कोई नया राष्ट्रपति चुनकर आता है और परंपरा के अनुसार निवर्तमान राष्ट्रपति की पत्नी उसकी पत्नी को राष्ट्रपति भवन (ह्वाइट हाउस) का परिचय कराती हैं, तब वह भूतों के अस्तित्व और स्थानों की भी पूरी जानकारी अवश्य दे देती है।

फिर भी ऐसी घटनाएँ वहाँ आये दिन होती ही रहती हैं। राष्ट्रपति एडम्स की पत्नी को वहाँ कपड़े सुखाते देखा गया, लिंकन को जूतों के फीते खोलते देखा गया। क्वीवलैंड की श्रीमती को हँसते और चिल्लाते सुना गया। इस अतींद्रिय अस्तित्व और अनुभूति का कारण क्या हो सकता है ? यह शोध व अध्ययन का लंबा विषय है, पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि मनुष्य का मृत्यु के बाद भी अस्तित्व बना रहता है। भारतीय दर्शन की इस मान्यता को निराधार कहने वालों को पहले अमेरिकी राष्ट्रपतियों, उनकी पत्नियों और सहकर्मियों को अन-उत्तरदायी और झूठा कहना होगा, पर यदि उनकी विशिष्टता पर विश्वास हो तो हमें भारतीय दर्शन के इन आधारभूत तथ्यों पर भी विश्वास करना और अपने जीवन को आध्यात्मिक पद्धति से ढालने का अभ्यास करना ही होगा।

● भूत बड़े-बड़ों ने देखा

टेलीफोन की घंटी बजी, वकील साहब ने उसे उठाकर कान से लगाया और कहा—हलो ! हलो !! कौन बोल रहा है ? पर उधर से कुछ आवाज न आई चोंगा नीचे रख दिया। लेकिन अभी वे उठने को ही थे कि घंटी फिर टनटनाई फिर रिसीवर उठाकर कान से लगाया, तो कोई भद्दी गाली बकने लगा। कई दिन तक

ऐसे ही कभी गालियाँ, कभी धोखा खाने के बाद भी उन्हें पता न चल पाया कौन तंग कर रहा है ?

फिर स्विच दबाया नहीं ट्यूब लाइट तेजी से चमकने लगा। बल्ब जला और फटाक से फूट पड़ा। कमरे में उनके अतिरिक्त एक चिड़िया भी नहीं तो भी यह ऊधम मच रहा है। वकील साहब बड़े तंग हुए अंत में हारकर बिजली विभाग को लिखा—कहीं कोई बिजली की गड़बड़ी है, उसे ठीक किया जाए। बिजली विभाग के इंजीनियर तक आए, सारे सर्किट को ओवरहालिंग कर गए, पर न तो कोई गड़बड़ी मिली और न बंद ही हुआ ऊधम। एडवोकेट साहब का बुरा हाल था।

यह प्रसंग कोई प्रथा नहीं वरन् एक सत्य घटना है, जो रोजेनहीम के एक वकील के साथ जून १९६८ में घटी। इस समाचार का विवरण नवनीत (हिंदी डाइजेस्ट) में भी छपा है। लगभग ८-९ महीने की लगातार जाँच के बाद बिजली विशेषज्ञों ने जबाव दे दिया और स्थिति नियंत्रण में नहीं आई। इसके बाद परा-मनोविज्ञान वेत्ता प्रो० हाँस बेंडर, जो कि "फ्रीवर्ग इन्स्टीट्यूट ऑफ पैरासाइकोलॉजी" के अध्यक्ष हैं, ने इन परिस्थितियों की जाँच की और बताया कि सब कुछ देखने के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि मामला मनोगति क्रम (साइको-काइनेसिस) का है। मनोगति क्रम का अर्थ ही है कि सूक्ष्म मानसिक शक्तियाँ, जो भौतिक पदार्थों पर नियंत्रण और हस्तक्षेप कर सकती हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि मानसिक अवस्था किसी भूत-प्रेत के रूप में स्थित रह सकती है।

ब्राजील के अति प्रतिष्ठित दैनिक पत्र "ओ क्रूजीरो" के प्रतिनिधियों ने आँखों देखा और जाँचा हुआ समाचार छापा था कि साओपाअलो राज्य के इटापिका नगर के एक किसान 'सिडकांटो' के घर पर न जाने कहाँ से पत्थर बरसते थे और घर में रहने वालों को घायल करते थे। भूत-उपचारकों से लेकर अन्य सभी प्रकार के उपाय जब इसकी रोकथाम में असफल हो गए तो पुलिस को सूचना दी गई। वे लोग भी रहस्य पर से पर्दा न उठा सके तो विषय सर्व-साधारण की चर्चा का बन गया और ब्राजील ही नहीं

योरोप के अन्य विशिष्ट व्यक्ति भी तथ्य का हर दृष्टि से पता लगाने के लिए पहुँचे, पर न तो घटना क्रम को झुठलाया जा सका और न उसका रहस्योद्घाटन किया जा सका।

इंग्लैंड के सुप्रसिद्ध मनोविज्ञानी और दार्शनिक सी. ई. एम. जोड ने बी. बी. सी. पर एक परिसंवाद में भाग लेते हुए कहा था—"मैं भूतों पर विश्वास नहीं करता था, पर एक दिन जब मेरे ऊपर प्रयोगशाला में बैठे-बैठे चारों ओर से साबुन की टिकिया बरसनी आरंभ हो गईं और खोज करने पर उसका कोई आधार नहीं सूझ पड़ा तो मेरा विश्वास बदल गया और मैं अब भूतों के अस्तित्व को मानता हूँ।"

क्रेंब्रिज विश्व-विद्यालय में प्रेतात्माओं संबंधी शोध-कार्य करने के लिए एक विशेष विभाग ही खुला हुआ है। अमेरिका की 'साइकिकल रिसर्च फाउंडेशन' द्वारा अनेक वैज्ञानिकों और बुद्धिजीवियों के सहयोग से सुनियोजित शोध-कार्य चल रहा है।

प्रेतबाधाओं के स्वरूप को भी वैज्ञानिकों ने समझने का प्रयास किया है। ऐसे स्पष्ट प्रमाण मिले हैं कि किसी घर या स्थान विशेष में आकस्मिक रूप से घंटियाँ बज उठेंगी, चीजें इधर-उधर बिखरने लगेंगी, पत्थर, धूलिकण आदि बरसने लगेंगे, किवाड़-खिड़कियाँ स्वयं ही खुलने बंद होने लगेंगी और ऐसा बिना किसी भी व्यक्ति या यंत्र की गतिविधि के होगा। ऐसी घटनाएँ अब भली-भाँति परखी जा चुकी हैं और वैज्ञानिकों द्वारा सत्य पाई गई हैं। इसका अभी तक वैज्ञानिक यही स्पष्टीकरण प्रस्तुत कर सके हैं कि प्रेतबाधा संबंधी समस्त घटनाएँ उस क्षेत्र के आस-पास किसी जीवित देहधारी की ही उपस्थिति में घटित होती हैं। इसका अर्थ है कि उपस्थित व्यक्ति के भीतर प्रविष्ट "साइकिक फैक्टर" या कि उसी व्यक्ति का अवचेतन अपनी आंतरिक ऊर्जा को वहाँ प्रक्षिप्त करता है, भले ही वह स्वयं सचेतन रूप में इस क्रिया से अवगत नहीं रहता। पर जीवित व्यक्ति की मानसिक ऊर्जा के सहयोग से ही ये घटनाएँ घटित हो पाती हैं। यह सिद्धांत व्यक्ति में निहित असीम संभावनाओं

तथा अपार मानसिक ऊर्जा की धारणा की ही पुष्टि करता है। इस मानसिक ऊर्जा को ही मनोबल, आत्मबल आदि कहा गया है।

वस्तुओं तथा व्यक्तियों के सहसा हवा में ऊपर उठ जाने तथा तैरने, व्यक्ति का थोड़े समय के लिए अत्यधिक लंबा-ऊँचा, हो जाने, अंतर्धान होने, आकाश-संचरण आदि की घटनाएँ भी वैज्ञानिकों द्वारा नियंत्रित वातावरण में स्पष्टतः देखी-परखी गई हैं। सर डगलस होम ने अनेक वैज्ञानिकों के सामने कुर्सी समेत हवा में ऊपर उठ जाने, कई फुट लंबे हो जाने आदि को ऊपर उठा देने के अनेक प्रदर्शन किये थे और भी कई प्रयोगकर्त्ता ऐसे प्रदर्शन कर चुके व कर रहे हैं। इनकी कैसी भी व्याख्या अभी तक वैज्ञानिक नहीं कर पाए हैं।

प्रेतात्मा के अस्तित्व संबंधी जो घटनाएँ सामने आती हैं, उनके अधिक गंभीर अन्वेषण किये जाने की आवश्यकता है। इन शोधों से मानव तत्त्व की कितनी ही विशेषताओं पर प्रकाश पड़ेगा और यह जाना जा सकेगा कि मरणोत्तर जीवन में मनुष्य को किन परिस्थितियों में होकर गुजरना पड़ता है ? इस तथ्य का जितना ही रहस्योद्घाटन होगा उतना ही यह स्पष्ट होता जायेगा कि जीवन अनंत है और उसकी संभावनाएँ असीम हैं। वर्तमान दृश्य जीवन तो उसका एक छोटा-सा अंग मात्र है।

● जड़ वस्तुओं के भी प्रेत ?

इस सिलसिले में एक और भी इससे भी बड़े आश्चर्य की बात यह सामने आई है कि जड़-पदार्थों से बने ऐसे माध्यम जिनके साथ जीवित मनुष्यों का घनिष्ठ संबंध रहा हो, अपना प्रेत अस्तित्व बना लेते हैं और मूल पदार्थ के नष्ट हो जाने पर भी अपने अस्तित्व का वैसा ही परिचय देते रहते हैं, जैसा कि मरने के बाद मनुष्य अपना परिचय प्रेत रूपों में प्रस्तुत करता रहता है।

समुद्री इतिहास में ऐसे अनेक प्रसंगों का उल्लेख है, जिसमें सामने से आते हुए जहाज के साथ संभावित टक्कर से बचाने के लिए मल्लाहों ने अपना जहाज तेजी से मोड़ा और उस प्रयास में

उनका अपना जहाज उलटकर नष्ट हो गया। यह जहाज जो सामने से आ रहा था और जिसकी टक्कर बचाने के लिए मल्लाह आतुरतापूर्वक प्रयत्न कर रहे थे, यहाँ यह कौन था, कहाँ का था—ठीक सामने टकराने जैसी स्थिति में क्यों हो रहा था ? उसके चालक उसे बचा क्यों नहीं रहे थे ? वह पीछे से कहाँ चला गया ? आदि प्रश्नों के उत्तर संतोषजनक नहीं मिले और यह मान लिया गया कि संभवतः वह मल्लाहों की आँखों का भ्रम था, वस्तुतः उस प्रकार के जहाज का अस्तित्व सिद्ध नहीं हुआ।

जाँच कमेटियों की रिपोर्ट में डूबने वाले और न डूबने वाले जहाजों तथा मल्लाहों की ऐसी अनेक गवाहियाँ हैं, जिन्होंने समुद्र की सतह पर ऐसे जहाज देखे, जिनका अस्तित्व प्रमाणित नहीं किया जा सका। रिपोर्टों में उसे भ्रम बताकर जाँच पर पर्दा डाल दिया, पर उन मल्लाहों और यात्रियों का समाधान न हो सका, जिन्होंने अपनी आँखों से सब कुछ देखा था। भ्रम तो एक-दो को हो सकता था, सारे मल्लाह और परियात्री एक ही तरह का दृश्य देखें यह कैसे हो सकता है ? रिपोर्ट अपनी जगह कायम रही और दर्शकों की मान्यताएँ अपनी जगह। पीछे यह अनुमान लगाया गया कि डूबे हुए जहाजों के प्रेत अपने जीवनकाल की आवृत्ति में समुद्र तल पर भ्रमण करते रहते हैं। यह उनका सूक्ष्म शरीर होता है, जिसमें सघन ठोस तत्त्व तो नहीं होते पर छाया आकृति ठीक वैसी ही होती है जैसी कि उनके जीवित काल में थी। डूबे हुए जलयानों के प्रेत होते हैं, यह अनुमान आरंभ में उपहासास्पद ही माना गया था, पीछे उनके प्रमाण इतने ज्यादा मिलते गये कि उस मान्यता को एक विचारणीय शोध-विषय माना गया। अभी भी मृत जलयानों का प्रेत रूप में जीवित रहना किसी प्रामाणिक कसौटी पर खरा सिद्ध नहीं हुआ है। इसलिए उस मान्यता को भ्रम स्तर पर ही रखा गया है। फिर भी शोधकर्त्ताओं को स्वयं इस निष्कर्ष से संतोष नहीं हुआ है। वे यह कहते रहते हैं कि उपलब्ध प्रमाण साधन अपर्याप्त हो सकते हैं और भविष्य में कई ऐसे उपकरण या सिद्धांत निकल

सकते हैं, जो इन बहुचर्चित प्रेतों के संबंध में कुछ अधिक संतोषजनक तथ्य प्रस्तुत कर सकें।

निर्जीव पदार्थों के भी प्रेत होते हैं, इस संदर्भ में समुद्री इतिहास के बाद स्थल-इतिहास की भी एक कड़ी आकर और भी जुड़ जाती है। रेल दुर्घटनाओं में ड्राइवरों के अनेकों बयान ऐसे हैं, जिनमें उन्होंने सामने से धड़धड़ाती हुई एक रेल आती देखी और उसकी टक्कर बचाने का प्रयास करते हुए कड़ा ब्रेक लगाने में उनका इंजन उलट गया; अथवा वे हतप्रभ होकर अपना संचालन-संतुलन खो बैठे। सामने से रेल क्या थी, कहाँ से आई थी ? इसका कोई प्रमाण न मिला; तो इसे ड्राइवरों की मनगढ़ंत कहानी अथवा मनोविकृति भर रहकर उपेक्षित कर दिया गया। पर ऐसे घटनाक्रम अनेकों थे, जिनमें टक्कर से दुर्घटना अथवा बचाव के लिए किए गए खतरनाक प्रयासों का पता चलता था। प्रमाणहीन बात को माना कैसे जाए और इतने लोग अकारण भ्रम फैलाते थे, यह भी कैसे गले उतारा जाए ? अंततः अनुमानों की शृंखला इस तरह भी जुड़ी कि जिस तरह डूबे हुए जलयानों के प्रेत समुद्र की सतह पर घूमते पाए जाते हैं, उसी प्रकार दुर्घटना में ग्रसित रेलों के भी प्रेत हो सकते हैं और उनके दृश्य देखकर सामान्य बुद्धि का ड्राइवर उन्हें एक यथार्थता मान सकता है।

'पदार्थ' का प्रेत 'प्रतिपदार्थ' विश्व का प्रेत 'प्रतिविश्व' छाया पुरुष की तरह साथ-साथ विद्यमान रहता है, उनकी चर्चा विज्ञान जगत् में इन दिनों प्रमुख चिंतन का विषय बनी हुई है। मनुष्य का प्रेत होता है, यह भी जाना और माना जाता रहा है। अब यह नया तथ्य सामने आया है कि महत्त्वपूर्ण घटनाओं के, महत्त्वपूर्ण पदार्थों के और प्रचंड संकल्प-सत्ताओं के भी प्रेत हो सकते हैं। स्थूल के नष्ट हो जाने पर भी सूक्ष्म का अस्तित्व बना रहता है। इस सूक्ष्म का गहन अन्वेषण हो सके तो हमारे ज्ञान-विज्ञान में एक नई वस्तु अति महत्त्वपूर्ण कड़ी जुड़ सकती है।



परकाया-प्रवेश की शक्ति-सामर्थ्य

*

अब विज्ञान क्रमशः प्रौढ़ होता चला गया है। पचास वर्ष पूर्व आत्मा और ईश्वर के अस्तित्व में इनकार करने का जो उत्साह था, वह अब ठंडा हो चला है। यह माना जाने लगा है कि आत्मा है और मरणोत्तर जीवन के उपरांत भी उसकी सत्ता पूर्णतया समाप्त नहीं हो जाती, वरन् किसी न किसी रूप में बनी ही रहती है।

यह सत्ता शरीर छोड़कर जब अंतरिक्ष में भ्रमण करती है, तो उसका परिचय प्रेतात्माओं के रूप में मिलता है, स्वर्ग-नरक की अनुभूति उसे इसी अवधि में होती है। इसके बाद पुनर्जन्म का चक्र चल पड़ता है। प्रेतों का आकार-प्रकार और उनके कर्म, स्वभाव का ठीक से पता नहीं चल सका है, पर जो प्रमाण मिलते हैं, उनसे उनका अस्तित्व अवश्य सिद्ध होता है। सत्य ही अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर अर्थात् दुर्बल मनोभूमि वाले लोगों के भीतर प्रविष्ट होकर, उनकी मूलसत्ता को परे धकेल कर अपना वर्चस्व स्थापित कर बैठने के भी प्रमाण मिले हैं।

आत्मा की स्वतंत्र सत्ता के भी ऐसे ही प्रतिपादन के प्रमाण मैं परकाया प्रवेश के सिद्धांत का समर्थन करने वाले कुछ आधुनिकतम एवं परखे, पहचाने उदाहरण हैं, जिन्हें किसी अंध-विश्वासी की भावुकता अथवा सनक नहीं कही जा सकती है। अमेरिका के हारवर्ड और कैलीफोर्निया विश्व-विद्यालय के दो प्रोफेसरों ने मिलकर "बीसवीं सदी में अचेतन मनोविज्ञान की नई खोज" विषय पर सुविस्तृत खोज की है। अपने विषय के अब उन्होंने अनेकों प्रमाण संग्रह किए हैं। उन्हें पुस्तक रूप में भी छपाया है और पत्र-पत्रिकाओं में भी उन प्रमाणित घटनाक्रमों को छपाया है। प्रस्तुत विवरणों में यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि आत्मा की स्वतंत्र सत्ता है और वह एक शरीर से दूसरे में परिवर्तन करते रहने में समर्थ है।

डॉ० आसवन ने अपनी शोध में एक ऐसे बर्तन विक्रेता का उल्लेख किया है, जो घर से टहलने के लिए निकला था, किंतु अचानक गायब हो गया। कहीं अन्यत्र जाकर कुछ काम करने लगा। घर वालों ने तलाश किया, पर कहीं कुछ पता न चला। दो वर्ष ऐसे ही बीत गए। इसके बाद अचानक उस बर्तन विक्रेता को पूर्व जन्म की स्मृति जगी और आश्चर्य के साथ अपनी नई स्थिति और पुरानी स्थिति की तुलना करने लगा। वह स्तब्ध रह गया कि उसका नाम, घर, व्यवसाय सब कुछ कैसे बदल गया और पुरानी स्थिति से इस नई स्थिति में उसे किसने, कैसे डाल दिया ?

जिस नये व्यक्ति के रूप में दो वर्ष से रहा रहा था, वह भी कोई अवास्तविकता न थी। कुछ समय पूर्व वह नया आदमी भी जीवित था, जिसके स्थानापन्न बनकर उसे रहना पड़ा। वह मशीनों की मरम्मत का काम करता था और घूम-फिरकर अपनी रोटी कमाता था। वही कार्य उसे भी नई स्थिति में मिल गया और दो वर्ष मजे की रोजी-रोटी कमाते गुजार लिए। जिस सराय में वह ठहरता था, जिस नानबाई के यहाँ वह रोटी खाता था, उन्हीं के यहाँ उसने अपनी व्यवस्था ऐसे जमा ली मानो उन स्थानों से वह पुराना परिचित चला आता है। उन दुकानों के नये-पुराने सभी कर्मचारियों के नाम और व्यवहार उसे याद थे। इसी प्रकार मरम्मत का काम जहाँ मिलता था, वह भी सब कुछ उसका जाना-पहचाना था।

दो वर्ष बाद मानो वह गहरी निद्रा में से उठा। अपने घर की याद आई और वापस चला गया। कुछ दिन उसे स्थानापन्न जन्म की स्मृति भी रही, पीछे वह धुँधली पड़ती चली गई और पीछे उसे उन दिनों की बातें लगभग पूरी तरह विस्मृत हो गई और पहले की तरह अपना कसेरे का धंधा करने लगा।

शोधकर्त्ताओं ने इस घटना का बहुत गंभीरता से लिया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि हो न हो यह किसी प्रबल आत्मा का एक सामान्य आत्मा को वशवर्ती करके, उसके शरीर पर अपना कब्जा

कर लेने की घटना है। जब उससे कब्जा छोड़ा तो पुरानी आत्मा अपनी जाग्रत् एवं स्वतंत्र सत्ता का परिचय देने की स्थिति में आ गई। इस घटना को डॉ० आसवन ने अपने अनुमानित निष्कर्ष के साथ कई प्रसिद्ध समाचार-पत्रों में छपाया।

एक दूसरी घटना रोडस नगर निवासी ऐसेलवर्न की है। वह बैंक से दस हजार का चैक भुनाकर बाहर निकला और अचानक गायब हो गया। घर वाले तलाश करते रहे, पर कुछ पता न चला। सोचा डाकुओं ने उसका अपहरण करके मार डाला और धन छीन लिया है। पर ऐसा हुआ नहीं। गायब होने के बाद वह सैकड़ों मील दूर एक अन्य नगर में जा पहुँचा और वहाँ उसने चीनी का व्यापार इस कुशलता से किया, मानो वह उस व्यवसाय का माहिर रहा हो। चीनी के व्यापारी उसकी वार्ता से बहुत प्रभावित थे और उसे निष्णात अनुभवी मानने लगे। नाम भी उसका बदल गया। इस व्यापारी को ए. जे. ब्राउन कहा जाने लगा। दो महीने में उसने बहुत रुपया कमाया और अपने क्षेत्र में अच्छी धाक जमा ली। किंतु इसके बाद अचानक उसे याद आई कि वह तो रोडस निवासी ऐसेलवर्न है, यहाँ कैसे आ गया और जिस चीनी के व्यवसाय से उसका दूर का भी वास्ता नहीं था, उसे वह क्यों करने लगा ? इस अपरिचित जगह में इतनी दूर उसे कौन, कैसे ले आया ? इन प्रश्नों का कोई उत्तर उसके पास नहीं था। वह डर गया, तुरंत ही चीनी का व्यवसाय समेटा और वापस अपने नगर को चल दिया।

इस घटना का भी लगभग वैसा ही निष्कर्ष था और यही अनुमान लगाया गया कि कोई मृत आत्मा किसी जीवित शरीर पर कब्जा करके, उससे अपनी रुचि का काम करा सकती है।

'साइकालॉजीकल रिव्यू' पत्रिका में एक घटना डॉक्टर डामा ने प्रकाशित कराई थी। डॉक्टर की चिकित्सा में एक मूर्छित रोगी आया। वह अच्छा तो हो गया पर प्रौढ़ता खोकर पाँच-वर्ष के बालक जैसी मनः स्थिति में आ गया। छोटे बच्चे जिस तरह सोचते और करते हैं, उसका सारा शारीरिक, मानसिक व्यवहार उसी तरह का

था। वह सुशिक्षित था पर पढ़ना-लिखना बिलकुल भूल गया था। कई महीने उसकी यही स्थिति रही। इसके बाद उसे पुरानी स्थिति याद आई और पुनः प्रौढ़ता वाले व्यक्तित्व में जाग्रत् परिवर्तित हो गया।

उपरोक्त घटना से मिलती-जुलती एक अन्य घटना इंग्लैंड के पादरी हाना की है। १५ अप्रैल सन् १८६७ में वे मोटर दुर्घटना में घायल हुए। अचेत अवस्था में अस्पताल पहुँचाए गए। होश में आए तो वे बिलकुल छोटे बालक की तरह थे और अपना नाम, पता, व्यवसाय आदि पूरी तरह भूल-चुके थे, यहाँ तक कि जो कुछ उन्होंने पढ़ा-लिखा था वह भी विस्मृत हो गया। इसके बाद वे उस पुरानी यहूदी भाषा में बात करने लगे, जिससे वे कभी परिचित न रहे। इस विचित्र परिवर्तन से डॉक्टर तथा दूसरे परिचित बहुत हैरान थे। आखिर उन्हें न्यूयार्क विशेष चिकित्सा के लिए भेजा गया। परिवर्तन धीरे-धीरे हुआ। कुछ समय उनके मस्तिष्क पर बालक का कब्जा रहता। कुछ समय वे पादरी हाना के रूप में बात करते। इस तरह उलट-पलट बहुत समय चली, तब कहीं वे अपने असली व्यक्तित्व में रह सकने योग्य बने।

इंग्लैंड के डॉ० मौर्टन प्रिंस ने मिस बोचैंप नामक लड़की की परीक्षा करने के बाद अपना यह मत व्यक्त किया कि भूत जैसी कोई वस्तु संभव है, जो गतिशील हो सकती है। इस लड़की की दशा कभी-कभी बड़ी विचित्र हो जाती थी। कई बार उसे दर्द होता था और कुछ देर उसकी विचित्र स्थिति रहती, फिर वह भली-सी हो जाती थी, किंतु उसके सब क्रिया-कलाप बदल जाते थे। उस समय वह अपना नाम बोचैंप न कहकर, सैली बताती थी और परिवार वालों को बहुत तंग करती थी। कई ऐसे पत्र लिख देती थी, जिसके विषय बोचैंप से संबंधित होते ही नहीं थे, बाद में उस लड़की की परेशानी बढ़ जाती थी। इसके बाद जब सैली चली जाती थी तो बोचैंप का व्यवहार फिर पूर्ववत् हो जाता था।

इसी प्रकार रेवरेंड एन्सिल बोर्न नामक एक ईसाई प्रचारक ने एक हलवाई के यहाँ नौकरी करके, एकाएक लोगों को हैरत में डाल दिया। कई संबंधी उसके पास गए और कहा आप पादरी होकर यह काम करते हैं—चलिए अपने निवास-स्थान में अपना काम करिए तो वह बिगड़कर बोला—"मेरा नाम एंसिल बोर्न नहीं, ए. जे. ब्रोन है, तो हमेशा से नौकरी करता हूँ।" कुछ दिन बाद ब्रोन फिर ईसाई प्रचारक का काम करने के लिए आ गया, पर उसने बताया कि इस बीच उसने क्या किया, इसका बिल्कुल स्मरण नहीं है, क्योंकि मेरा अस्तित्व ही न जाने कहाँ खो गया था ? यह तो बाद में पता चला कि ए. जे. ब्रोन नामक एक व्यक्ति पहले किसी हलवाई की दुकान पर काम करता था, पर उसकी कुछ दिन पूर्व मृत्यु हो गई थी।

पादरी महोदय उस अवधि में जो कुछ बोलते, खाते-पीते रहे वह पूर्व ब्रोन के स्वभाव से बिल्कुल मिलते-जुलते थे, जिसका कि उन्हें बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था। समझा जाता है कि इस अवधि में उनके शरीर पर उसकी प्रेतात्मा ने अधिकार कर लिया था। दोनों अवस्थाओं में वे पूर्ण स्वस्थ थे, मस्तिष्क भी ठीक था, वे एक विश्वसनीय व्यक्ति थे, तो भी इस तरह के असामान्य परिवर्तन के कारण क्या था, इसका कोई उत्तर विज्ञान देने में असमर्थ है। वह स्थूल वस्तुओं को जान सकता है सूक्ष्म तत्त्वों को नहीं।

कविवर गजानन मुक्तिबोध के संबंध में उनके अनेक मित्रों का और धर्म-पत्नी का यह ख्याल नहीं था कि वे प्रेत-बाधाओं के शिकार हो गये हैं, वरन् दिल्ली के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक डॉ० विग ने भी यह स्वीकार किया कि उस पर तीव्र-से-तीव्र औषधियों का कोई प्रभाव ही नहीं परिलक्षित होता, यह सर्वथा समझ से परे बात है। काशी निवासी शव-साधक तांत्रिक श्री अरुणकुमार शर्मा, जिन्होंने कठिन प्रेत साधनाएँ सिद्ध कीं, तिब्बत में रहकर लामाओं से गुह्य-तंत्र सीखे, श्रीलंका से बौद्ध-दर्शन में एम० ए० तथा जवासिद्धि उपलब्ध किया—श्री गजानन माधव मुक्तिबोध के संबंध

में पहले ही बता दिया था कि—"उन पर भूत व्याधि है और सन् १९६४ उनके जीवन का अंतिम वर्ष है।"

वही हुआ भी, हमीदिया अस्पताल भोपाल में उनकी अच्छी से अच्छी चिकित्सा की गई, किंतु वे अच्छे न हुए। मरणासन्न स्थिति में वे 'राम-राम' और आई, य (ओ माँ) ऐसे शब्द बोलते थे, जबकि उन्होंने जीवन में कभी उपासना न की थी। उनकी स्थिति देखने वाले सभी समीपवर्ती लोगों ने जो अधिकांश सभी शिक्षित और प्रतिष्ठित व्यक्ति रहे हैं, यह माना कि उनकी मृत्यु प्रेत बाधा से ही हुई। उनके निधन और दाह-कर्म की सूचना रेडियो से बड़े दु:ख के साथ दी गई थी।

कोई मृतात्मा किसी जीवित व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर सकती है और उस पर इच्छित समय तक अधिकार बनाए रह सकती है। इसके भी कितने ही उदाहरण मिले हैं ? इन उदाहरणों से सिद्ध होता है कि आत्मा मात्र शरीर की परिधि में ही बँधा हुआ नहीं है। वह इस सीमा का उल्लंघन करके, अन्य शरीरों में भी प्रवेश कर सकता है। इच्छित समय तक अधिकार बनाए रह सकता है और उसे छोड़ सकता है। ऐसा किस स्थिति में होना संभव है ? किस स्थिति में नहीं ? इसका ठीक से निर्णय तो नहीं हो सकता, पर इतना कहा जा सकता है, ऐसा होना असंभव या अविश्वस्त नहीं है। यद्यपि ऐसा झूठा प्रदर्शन कई बार ढोंग बनाकर भी किया जाता रहता है।

'दि अदर वर्ल्ड', 'जर्नीज आउट ऑफ दि बाडी' आदि ग्रंथों में इस प्रकार की अनेक घटनाओं का वर्णन है, जिसमें आत्माओं ने अपने शरीर को छोड़कर सूक्ष्म शरीर के सहारे बहुत कुछ देखा और बहुत कुछ किया है। इन घटनाओं से इस तथ्य पर प्रकाश डाला है कि अशरीरी आत्माओं का किन्हीं दूसरों के शरीर में प्रवेश करके, उनसे कुछ विशेष कार्य करा लेना संभव है। इसी प्रकार यह भी संभव है कि सूक्ष्म शरीर स्वयं इतना परिपुष्ट हो जाए कि

शरीरधारी की तरह स्वयं ही अपने क्रिया-कलाप का परिचय दे सके।

अरविंद आश्रम की संचालिका माता जी के बारे में कहा जाता है कि वे अपने बाल्यकाल में देह से आत्मा को बाहर निकालकर सूक्ष्म शरीर से दूर-दूर की यात्राएँ करती थीं।

परामनोविज्ञान वेत्ता प्रो० मुलडोन ने अपने ग्रंथ 'दि प्रोजेक्शन ऑफ एस्ट्रल बॉडी' में परकाया प्रवेश के सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि एक 'रजत तंतु' से आत्मा अपने स्थूल शरीर से संबंध बनाए रखकर भी अन्यत्र किस प्रकार जा सकता है और क्या कर सकता है ?

जगद्‌गुरू शंकराचार्य के बारे में कहा जाता है कि उनकी आत्मा कुछ समय के लिए अपना शरीर छोड़कर, किसी राजा के शरीर में रहने लगी थी और वहाँ उन्होंने कामकला के रहस्य सीखकर विदुषी भारती के प्रश्नों का उत्तर देते हुए शास्त्रार्थ जीता था।

यह एक भिन्न प्रकार का उदाहरण है, जिससे एक नये तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि कोई जीवित आत्मा भी किसी मृत शरीर पर अपना कब्जा करके, उससे जीवितों जैसा प्रयोजन सिद्ध कर सकता है।

इस प्रकार की अनेकानेक घटनाएँ सामने आती रहती हैं और यह सिद्ध करती-रहती हैं कि मरने के साथ जीवन का अंत नहीं हो जाता वरन् उसके उपरांत भी बना रहता है। इससे आत्मा का स्वतंत्र और अनंत अस्तित्व सिद्ध होता है।

जन्म और मृत्यु इस स्वतंत्र आत्मा की अविराम यात्रा के दो पड़ाव मात्र हैं। उसकी क्रीड़ा-कल्लोल की दो विशिष्ट भंगिमाएँ हैं। परकाया प्रवेश भी उस आत्मा की ऐसी ही एक नई गतिविधि, एक नया खेल, एक नयी भूमिका है। परकाया प्रवेश के ये प्रमाण जहाँ आत्मा की अकूत सामर्थ्य को प्रतिपादित करते हैं, वहीं यह भी कि

इस देह के नाश से चेतना का कुछ भी नहीं बनता-बिगड़ता। जन्म और मृत्यु शरीर का होता है आत्मा का नहीं। जन्म का अर्थ आत्मा का नयी भूमिका में प्रकट होना और मृत्यु का अर्थ उस भूमिका का पटापेक्ष मात्र है। जन्म-मृत्यु दोनों ही जीवन के अविच्छिन्न प्रवाह के दो मध्यवर्ती पड़ाव मात्र हैं।

'जन्म' शब्द संस्कृत के 'जनि प्रादुर्भावे' शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है—व्यक्त होना अर्थात् संसार में नया कुछ नहीं बनता सब अव्यक्त प्रकृति में से व्यक्त होता रहता है, उसी का नाम जन्म लेना, या उत्पत्ति है। उत्पत्ति शब्द भी 'उत् पूर्वक पद' धातु से बना है, उसका अर्थ भी यही होता है कि वह अब तक अप्रकट था अब प्रकट हो गया। संसार में जो कुछ बनता-बिगड़ता है—दिखाई दे रहा है—वह सब पंच महाभूतों की विलक्षण रचना मात्र है। पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता, केवल रूपांतरित होता है। यह विज्ञान भी मानता है।

इस सिद्धांत से स्वतः सिद्ध होता है कि जीव की चेतना का संबंध केवल इस शरीर से नहीं है, वह इस शरीर में केवल प्रकट हुई है। जब यह शरीर नहीं बना था, तब भी वह चेतना थी। विज्ञान भी मानता है कि मनुष्य शरीर का निर्माण जिन कोशों (सेल्स) से होता है, वह मुख्यतः दो भागों में विभक्त है—(१) एक नाभिक (न्यूक्लियस) यह चेतन अंश है। सुनना, देखना, सूँघना, व्यक्त होना—यह उसी के गुण हैं। (२) साइटोप्लाज्म अर्थात् पंच भौतिक प्राकृतिक पदार्थ—जल, अग्नि, आकाश, हवा और पार्थिव तत्त्वों का सम्मिश्रण। इनमें से प्रकृति परिवर्तनशील है, मनुष्य शरीर के प्राकृतिक कोश बदलते हैं, उसके अनुरूप चेतना के गुण-कर्म-स्वभाव में तो अंतर आता है, पर मूल चेतना में कोई अंतर नहीं आता। इसी चेतन वाले अंश में पाए जाने वाले संस्कार सूत्र (जीन्स) अमर हैं, यह वैज्ञानिक भी मानते हैं। इससे प्रकट होता है कि प्रजनन कोश में 'जीन्स' एक कोश से सैकड़ों कोशों में विकसित तो होता है, तरुण अवस्था तक वह ६०,००,००,००,००,००,००,००,००,००,०० कोश तैयार तो कर लेता है, पर वह कभी न रहा हो, चेतना कभी नष्ट होकर नई बनी हो, ऐसा नहीं

होता। जिस प्रकार भाप एक ही है, पर हवा के संयोग से उससे सैकड़ों तरह की आकृतियाँ बनती-बिगड़ती रहती हैं, उसी प्रकार सैकड़ों प्रकार के शरीर बनते-बिगड़ते रहने के बावजूद चेतना का प्रवाह अनंत और अखंड है। जिस प्रकार जल में भंवर उठते रहते हैं, उसी प्रकार चेतना भ्रमवश नाना स्वरूपों में विभक्त होते रहने के कारण अपने आपको जन्म और मृत्यु का घटक मान लेती है।

जन्म के पहले जिस प्रकार हम थे, उसी प्रकार मृत्यु भी कोई ऐसी घटना नहीं है, जिससे जीवन का नाश सिद्ध होता हो। नाश शब्द भी जन्म की तरह 'नश अदर्शने' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है जो अभी तक दिखाई दे रहा था, वह अब अव्यक्त हो गया। वह अपनी सूक्ष्म अवस्था में चला गया। शरीर स्थूल था उसके प्रविष्ट होने के कारण संरचना दिखाई दे रही थी, चेतना व्यक्त थी पर शरीर के बाद वह नष्ट हो गई हो, ऐसा नहीं। अब इस तथ्य को विज्ञान भी मानने लगा है। अलबत्ता विज्ञान प्रकट का संबंध अभी तक मनोमय विज्ञान से जोड़ नहीं पाया, इसीलिये वह परलोक पुनर्जन्म, लोकोत्तर जीवन, भूत-प्रेत, देव-योनि, यक्ष, किन्नर, पिशाच, बैताल आदि अतींद्रिय अवस्थाओं का विश्लेषण नहीं कर पाता। पर मृत्यु के बाद जीवन नष्ट नहीं हो जाता है, यह एक अकाट्य तथ्य है और इसी आधारभूत सिद्धांत के कारण भारतीय जीवन पद्धति का निर्धारण इस प्रकार किया गया है कि वह मृत्यु के बाद भी अपने जीवन के अनंत प्रवाह को अपने यथार्थ लक्ष्य स्वर्ग, मुक्ति और ईश्वर दर्शन की ओर मोड़े रह सके।

परकाया-प्रवेश की शक्ति-सामर्थ्य भी आत्मा की एक सहज शक्ति मात्र है, लक्ष्य नहीं। दुष्ट प्रेतात्माएँ उस सामर्थ्य का दुरुपयोग करती हैं, जबकि दयालु पितर आत्माएँ उसका उपयोग कर, दूसरों को उपकृत करती हैं। शंकराचार्य जैसे योगी इसी सामर्थ्य का प्रयोग समाज कल्याण के लिए करते हैं।



स्वजनों-सुहृदों से संबंध के इच्छुक—भूत

*

मृत्यु के उपरांत मनुष्य के सूक्ष्म शरीर से प्रेतयोनि में बने रहने के प्रमाण भी मिलते हैं। मरने के बाद भी आत्मा अपने संबंधियों से संपर्क बनाने का इच्छुक रहता है। आह्वान करने की पद्धति मालूम होने पर वह संपर्क घनिष्ठ भी हो जाता है और उसमें ऐसे तथ्य जुड़े रहते हैं, जिनके कारण इस संपर्क की वास्तविकता में कोई संदेह नहीं रह जाता। प्रेतयोनि का अस्तित्व भी मरणोत्तर जीवन की पुष्टि करता है। स्थूल शरीर न सही, सूक्ष्म शरीर सही—आत्मा का अस्तित्व तो विद्यमान रहा ही हैं। कब्र में कैद रहने वाली—अस्तित्व प्रकट न कर सकने वाली बात—शरीर के साथ आत्मा की समाप्ति हो जाने वाली बात तो एक प्रकार से मिथ्या ही सिद्ध हो गई।

मरने के बाद पुनर्जन्म मिलता है। इसके मध्यवर्ती समय में कुछ अवधि विश्राम के लिए मिलती है। आमतौर से आत्माएँ इस काल में लंबी जिंदगी में अनवरत रूप से किए गए श्रम की थकान उतारती रहती हैं और गहरी निद्रा में सोई पड़ी रहती हैं। जैसे दिन भर काम करने के उपरांत, रात्रि में सो लेने के उपरांत प्रातःकाल ताजगी आती है और नई शक्ति के साथ नए सिरे से उत्साहपूर्ण मनः स्थिति में काम करना संभव हो जाता है, उसी प्रकार इस मध्यावधि विश्राम के बाद मृतात्मा नवीन जन्म धारण करके, नए सिरे से पुनर्जन्म का क्रियाकलाप आरंभ करता है।

इस निद्राकाल में तरह-तरह के स्वप्न आते रहते हैं। सूक्ष्म शरीर का सचेतन मस्तिष्क समाप्त हो जाता है और अचेतन का ही जीवसत्ता पर आधिपत्य रहता है। अचेतन में जैसे भले-बुरे संस्कार दबे पड़े होते हैं, वे उभरकर दृश्य रूप धारण करते हुए सामने उपस्थित होते हैं। जिसने जीवन का अधिकांश भाग, दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों में गुजारा है, उसे उसकी प्रतिक्रिया ही भयावह

दृश्यावली के रूप में दिखाई पड़ेगी। इसी अनुभूति का नाम नरक है। जिन्होंने श्रेष्ठ जीवन जिया, उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तृत्व अपनाते हुए जिंदगी का अधिकांश समय बिताया, उनके अचेतन में दिव्य-संस्कार जगे रहते हैं और वे उस मरणोत्तर निद्राकाल में दिव्य-स्वप्न बनकर उभरते हैं, उस सुखद स्वप्न श्रृंखला को स्वर्ग कहते हैं। स्वर्ग नरक के सुहावने, डरावने सपने यह छाया डालने आते हैं कि भविष्य में किस दिशा में चलना उपयुक्त और किस ओर चलना अनुपयुक्त रहेगा ?

इसी अवधि में जिन्हें गहरी नींद नहीं आती—बेचैनी बनी रहती है, उन्हें प्रेत स्तर का समय गुजारना पड़ता है। मरने के बाद स्थूल शरीर का अंत हो जाता है, किंतु सूक्ष्म शरीर यथावत् बना रहता है। प्राणी अपने आपको लगभग उसी स्थिति में उसी शरीर कलेवर में अनुभव करता है, जिसमें जीवित स्थिति में था। अंतर इतना ही होता है कि इंद्रियों की सहायता से जो प्रत्यक्ष सुख मिल सकता था वह नहीं मिलता। तरह-तरह के स्वाद सूक्ष्म इंद्रियाँ अनुभव कर सकती हैं, पर वे पदार्थ को उदरस्थ करने और उपभोग करने का वैसा रसास्वादन नहीं कर पाती, जैसा कि स्थूल शरीर के रहते करती थी।

संसार के पदार्थों को वह देखता है, पर वह दूसरों को वायु भूत होने के कारण दीखता नहीं। पैर या पंख न होते हुए भी वह उड़ या चल सकता है। दूसरों के मस्तिष्क या शरीर में अपना प्रवेश कर सकता है और उसे अपने अस्तित्व का अनुभव आवेश के रूप में घटना या दृश्य के रूप में दे सकता है। बातचीत, वाणी या शब्दावली के द्वारा तो नहीं कर सकता, पर किन्हीं व्यक्तियों या पदार्थों के माध्यम से अपनी बात प्रकट कर सकता है। प्रेत अवस्था में जीवित स्थिति की अपेक्षा कुछ कमियाँ आ जाती हैं, तो कुछ विशेषताएँ बढ़ जाती हैं। इन सब बातों का प्रमाण प्रेतों के अस्तित्व अथवा क्रिया-कलापों के ऐसे आधारों पर मिलता है, जिनकी

यथार्थता तथ्यों की कसौटी पर कसे जाने से सर्वथा सत्य सिद्ध होती है।

विश्व विख्यात 'लाइफ' पत्रिका के संपादक जार्ज लेथम की वह लेखमाला पढ़ने के योग्य है, जो उन्होंने 'मैं परलोकवादी क्यों हूँ' शीर्षक से कई पत्रों में प्रकाशित कराई थी। उनका पुत्र जान भी फैलडर्स के मोर्चे पर महायुद्ध में मारा गया था। तोप के गोले ने उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिए थे। फिर भी उसकी आत्मा बनी रही और अपने पिता के साथ संपर्क बनाए रही। लेथम ने लिखा है—मेरा पुत्र जान स्वर्गीय माना जाता है, पर मेरे लिए वह अभी भी उसी प्रकार जीवित है, जैसे वह किसी अन्य नगर में रहते हुए भी पत्र, फोन आदि के माध्यम से संदेशों का आदान-प्रदान करता हो। उन्होंने अपनी मान्यता को भ्रम अथवा भावावेश जैसा न समझ लिया जाए, इस आशंका का खंडन करने वाले ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किए हैं, जिनके आधार पर मरणोत्तर जीवन पर संदेह करने वालों को भी इस संदर्भ में प्रामाणिक जानकारियाँ प्राप्त करने और तथ्य तक पहुँचने में सहायता मिल सके।

सर ओलिवर लाज, सर विलियम क्रुक्स की तरह ही विज्ञान क्षेत्र के अन्य प्रामाणिक विद्वान भी मरणोत्तर जीवन और आत्मा के अस्तित्व पर अन्वेषण करते रहे हैं, इनमें से डॉ० ए० रसल वालेस और सर विलियम बैरेट के नाम भी हैं, जिन्होंने आत्मा का अस्तित्व किन्हीं किंवदंतियों अथवा पूर्व प्रचलित मान्यताओं के आधार पर नहीं वरन् उपलब्ध ठोस प्रमाणों के आधार पर ही स्वीकार किया था। इन प्रमाणों की चर्चा उन्होंने अपनी पुस्तकों में की है।

स्काटलैंड के सेंट कुर्री नामक गाँव में एक बालक जन्मा डेनियल डगलस होम, पिता दरिद्र और बालक रोगी। बच्चे को चाची ने पाला। चौदह वर्ष की उम्र तक वह ऐसे ही तरह-तरह की बीमारियों में ग्रसित रहकर ऐसे ही दिन काटता रहा। इसी बीच उसे यह अनुभव होता रहा कि कोई प्रेतात्मा उसके साथ संबंध बनाती है और तरह-तरह के संदेश पहुँचाती है। डरते-डरते उसने वे

संकेत अपने घर वालों और पड़ोसियों को बताए। पूर्व सूचनाएँ जब सही निकलीं तो उनका विश्वास बढ़ता गया और अमुक समस्या का हल प्रेतात्माओं से पूछकर बताने के लिए उसका उपयोग किया जाने लगा। जो परामर्श मिलते उनमें से अधिकांश बहुत ही उपयोगी महत्त्वपूर्ण और अप्रत्याशित होते थे।

सन् १८५० का वर्ष और जुलाई का महीना था। उसकी चाची ने मेज पर भोजन की प्लेटें सजाई हुई थीं। अचानक प्लेटों के आपस में टकराने की आवाज आई। बाहर निकलकर उन्होंने देखा तो पाया कि प्लेटें टूटी हुईं जमीन पर पड़ी हैं। उन्होंने इसका कारण होम की किसी हरकत को समझा और उस पर बुरी तरह झल्लाई पर वह निर्दोष था। सिर झुकाए एक कोने में खड़ा था। उसने इतना ही कहा इसमें मेरा दोष नहीं है। चाची ने दूसरी घटना यह देखी कि टूटे हुए टुकड़े अपने आप इकट्ठे हो रहे हैं और जहाँ-तहाँ बिखरे न रहकर, एक कोने में जमा हो रहे हैं। यह और भी अधिक आश्चर्यजनक था। समेटने वाला दिखाई कोई नहीं पड़ता। तोड़ने वाला कोई नहीं फिर प्लेटों में यह हलचल कैसे हो रही है ? होम का प्रेतात्माओं से संबंध होने की बात और भी अधिक अच्छी तरह पुष्ट हो गई।

जब भूत-प्रेत की बात अधिक फैली तो चाची डर गई और उसने झंझट भरे होम को घर से निकाल दिया। वहाँ से वह इंग्लैंड चला गया। अपनी शारीरिक रुग्णता की चिकित्सा कराने के सिलसिले में उसका संपर्क डॉ० काक्स से हुआ। वे अध्यात्मवादी थे, उन्होंने न केवल रुचिपूर्वक इलाज ही किया वरन् लड़के की आत्मिक शक्ति को बढ़ाने में भी सहायता की, ताकि वह परलोक की आत्माओं से अधिक अच्छा संबंध बना सकने में समर्थ हो सके। इस साधना से उसे आश्चर्यजनक सफलता मिली। उसे प्रेतात्माओं का प्रामाणिक संदेशवाहक माना जाने लगा। इस संदर्भ में इंग्लैंड के उच्चकोटि के व्यक्ति उससे अपना समाधान कराने के लिए मिलने आए और संतुष्ट होकर लौटे। इन ख्यातिनामा लोगों में इवनिंग

पोस्ट के संपादक विलियम कुलेन ब्रामेट, प्रख्यात उपन्यासकार विलियम थेकर, प्रसिद्ध रसायन विज्ञानी सर क्रुक्स जैसे मूर्धन्य लोगों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उसकी विलक्षण प्रतिभा के संबंध में पत्र-पत्रिकाओं में कितने ही लेख घटनाक्रम के विवरणों सहित प्रकाशित हुए ?

स्वर्गीय सम्राट नेपोलियन का एक संदेश लेकर, वह २७ फरवरी १८६० को सम्राट से मिला। साम्राज्ञी युजीन तो उन अद्‌भुत किंतु यथार्थ संदेशों से इतनी अधिक प्रभावित हुई कि पुरस्कार में होम को लाखों के बहुमूल्य उपहार दे डाले।

होम के पूर्व जन्म की पत्नी रूस में जन्मी थी, वह उसी से विवाह करना चाहता था। यह कठिन था क्योंकि वह लड़की रूस के शाही जनरल क्रोल की इकलौती पुत्री थी। इतने प्रतिष्ठित और संपन्न पिता की सुशिक्षित पुत्री, एक बीमार और प्रेत व्यवसाय का उपहासास्पद धंधा करने वाले के साथ कैसे ब्याही जा सकती थी ? विशेषतया ऐसी दशा में जबकि दोनों एक-दूसरे से परिचित भी न थे और सुदूर देशों में रहते थे। यह कठिन कार्य काउंट ऑफ मांट क्रिसी के प्रसिद्ध उपन्यासकार ड्यूमा ने अपने कंधों पर लिया। उन्होंने संदेशवाहक की सफल भूमिका निबाही और अंततः ८ अगस्त १८६० को दोनों का विवाह हो गया। दोनों ने मिलकर प्रेतात्मा विद्या के शोध-कार्य को और भी आगे बढ़ाया।

होम २१ जून १८८६ को मरा। इससे पूर्व वह अपने प्रेतात्माओं के अनुभव संदर्भ में एक खोजपूर्ण पुस्तक प्रकाशित करा चुका था—'लाइट्स एंड शैडोज आफ स्प्रिचुअलिज्म'; इस पुस्तक की भारी खपत हुई थी और होम की अच्छी कमाई हुई थी।

मृत्यु के समय उसकी पत्नी सिरहाने बैठी रो रही थी। होम ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा—पगली, मैं मर कहाँ रहा हूँ, शरीर छूट जाने पर भी मैं तेरे साथ बराबर संपर्क बनाए रहूँगा। आत्मा और कला कहीं मरा करती है ?

कुछ समय पूर्व इंग्लैंड के ख्यातिनाम कप्तान डेविड के ऊपर प्रेतात्मा के प्रकोप और उससे छुटकारे की घटना का समाचार इंग्लैंड के प्रायः सभी प्रमुख पत्रों में छपा था। डेविड की गणना उस देश के मूर्धन्य सेनाध्यक्षों में की जाती थी, उनका विक्षिप्त हो जाना और हर घड़ी भयंकर प्रेत की छाया को अपने आस-पास उपद्रव करते देखना, एक असाधारण कौतूहल की बात थी। चिकित्सकों ने तरह-तरह के परीक्षण किए यहाँ तक कि मानसिक विकृति की आशंका को भी बारीकी से परखा, पर न तो उन्हें कोई शारीरिक रोग था और न मानसिक। इतने पर भी इस कदर भयभीत होना, उन जैसे दुस्साहसी के लिए सर्वथा अपत्याशित था। वे धीरे-धीरे मरणासन्न स्थिति में जा पहुँचे थे।

एक प्रेत विद्याविज्ञ बुढ़िया को डेविड की पत्नी बुलाकर लाई। वह आँखें बंद करके ध्यान करती रही। पीछे उसने डेविड का चीन से खरीदा हुआ वह बहुमूल्य कोट मँगाया, जो उन्हें अत्यधिक प्रिय था। बुढ़िया ने उसके अस्तर में लगे खून के धब्बे दिखाए और बताया कि एक व्यक्ति की हत्या इसी कोट को पहने हुए हुई थी। उसी आत्मा की छाया इस कोट के साथ रहती थी। उसे भी यह अत्यधिक प्रिय है। वह किसी दूसरे का कब्जा इस पर नहीं देखना चाहती। जब तक कोट घर में रहेगा, तब तक उस प्रेतात्मा का आंतक भी बना रहेगा।

बुढ़िया के परामर्श के अनुसार कोट उसी समय जला दिया गया और डेविड को उसी क्षण प्रेत के आतंक से मुक्ति मिल गई।

विश्व विख्यात नर्तकी अन्नापावलोवना की मृत्यु-स्मृति में उसकी शिष्या ने एक नृत्य समारोह आयोजित किया तो उसकी मृतात्मा भी साथ-साथ नृत्य कर रही थी। दर्शकों ने उसे अपनी आँखों से देखा।

इटली के प्रसिद्ध वायलिनवादक पागगिनी की मृत्यु स्मृति में आयोजित समारोह में मृतात्मा का प्रिय वायलिन स्वयं ही बज उठा

और आवाजें आईं कि मैं पागगिनी हूँ—मैं पागगिनी हूँ। दर्शकों ने इसे प्रेतात्मा समझा।

इटली की विश्व प्रसिद्ध नायिका जूलियट की मृत्यु के बाद भी उसके पास आने वाले हजारों पत्रों के उत्तर लोगों के पास पहुँचते रहे। जिनके पास पत्र पहुँचे उनके पत्र पूर्व पत्रों की बिल्कुल संगति में थे। कई में पूर्व पत्रों का उल्लेख भी होता था। यह कहानी भी बड़ी विचित्र है कहते हैं, जूलियट की यहाँ समाधि थी, वहीं पर दो लैटर बॉक्स टाँगे गये थे, एक में पत्र आते थे, दूसरे में डाले जाते थे, जिन्हें डाकिया नियमित रूप से ले जाता था, पत्र यद्यपि समाधि का रक्षक इहोरे सोलोमिनी लिखता था, पर वह जो कुछ लिखता था, स्वयं भी नहीं जानता था। वह सारी बातें उसे निद्रावस्था में मालूम होती थीं। वह बताता था कि जूलियट की आत्मा आती है और प्रत्येक पत्र का उत्तर उसे बता देती है। वह तो लेखनभर करती जाता है। बतलाने वाली है—स्वर्गीया जूलियट। यह क्रम इहोरे की मृत्यु के साथ ही टूट गया। इससे स्पष्ट है कि प्रेतात्मा पूर्व की आकांक्षाओं से लिपटी रहती हैं और उनकी पूर्ति के लिए उचित माध्यम की तलाश में रहती है।

'फेट' नामक पत्रिका में पेज नं. ४३ में श्रीमती सेना सरंजेस्की का संस्मरण 'सिसकते भूत का संदेश' छपा है। वे लिखती हैं कि वे जिस मकान में रहती थीं, उसमें कभी-कभी सीढ़ियों पर और कमरों में किसी के टहलने की आवाज आया करती थी। एक दिन उन्हें लगा कि पास ही कोई छाया खड़ी है। उन्हें स्मरण हो आया कि इस मकान में टेड अलिशन नामक व्यक्ति ने आत्म-हत्या की थी। यही सबको मालूम भी था। वे लिखती हैं—मैंने साहस करके पूछा—"आप टेड तो नहीं हैं तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब मैंने यह स्पष्ट सुना—'यस'। मैंने पूछा आप कुछ बताना चाहते हैं ? पर इससे पूर्व कि कोई उत्तर सुनूँ, वह छाया गायब हो गई और फिर कई दिन बाद आई। मुझे लगा कि वह कुर्सी पर बैठ गया है। मैंने फिर साहस करके पूछा—"आप सिसकते क्यों हैं, क्या

आप कुछ कहना चाहते हैं ?" इस बार उसने बताया—"मैंने आत्म-हत्या नहीं की थी, किसी जहरीली औषधि के भूल से सेवन से यह दुर्घटना हुई। आप मेरी धर्मपत्नी को कहना, मैं अपनी बच्चियों को बहुत प्यार करता हूँ।" इसके साथ ही वह आत्मा वहाँ से चली गई। बाद में मैंने श्रीमती टेड से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि निःसंदेह वे अपने साथ इंसूलिन की शीशी रखते थे और उसी के द्वारा उनकी मृत्यु हुई थी। उस दिन के बाद वहाँ कोई आत्मा नहीं आई।

● शाही परिवार के लोगों का भूत संपर्क

इंग्लैंड के राज परिवार में अशरीरी प्रेतात्माओं के अस्तित्व का चिरकाल तक अनुभव किया जाता रहा। इस संबंध में डॉ० लीज की लिखी वे पुस्तकें न केवल मरणोत्तर जीवन पर प्रकाश डालती हैं—वरन् राज परिवार को इस प्रकार की क्या अनुभूतियाँ होती रहीं इसकी भी चर्चा करती हैं।

उन दिनों राज्य सिंहासन पर पंचम जार्ज अवस्थित थे, उनकी बहिन राजकुमारी 'लुईस' सुहाग के बहुत थोड़े दिन देख पाई और विधवा हो गई। लुईस को अपने पति 'ड्यूक ऑफ फिफ' के प्रति गहरी अनुरक्ति थी। वह उनके दिवंगत हो जाने के उपरांत भी बनी रही और यह संबंध सूत्र बनाए रखना दिवंगत आत्मा ने भी स्वीकार कर लिया। वे प्रेत रूप में लुईस के पास बराबर आते रहे और उससे संपर्क बनाए रहे। लुईस भी बहुत दिन जीवित नहीं रहीं। उसकी मृत्यु के उपरांत राजकुमारी की सचिव एलिजाबेथ गोर्डन ने विस्तारपूर्वक प्रकट किया, जिससे उस घटना क्रम पर प्रकाश पड़ता है, जिसके अनुसार लुईस और उनके स्वर्गीय पति का मिलन, संभाषण, सान्निध्य का क्रम कितनी घनिष्टतापूर्वक चलता रहा, मानो शरीर न रहने पर भी ड्यूक का अस्तित्व यथावत् बना रहा हो।

इससे पूर्व की एक और घटना है, जो प्रेतात्माओं के अस्तित्व को और भी अच्छी तरह प्रमाणित करती है। सम्राट एडवर्ड सप्तम की पत्नी महारानी ऐलेग्जेंड्रा प्रेत विद्या पर विश्वास करती थी और जब-तब मृतात्माओं के आह्वान का प्रयोग किया करती थी। एक बार ऐसे ही प्रयोग—सेयांस से इन्हें संदेश मिला, जिसे एक तरह का विस्फोट ही कहना चाहिए। उन्हें प्रेत द्वारा सूचना दी गई कि—"सम्राट एडवर्ड अब कुछ ही दिन जीवित रह सकेंगे, उनकी उसी कोवे में मृत्यु होगी, जिसमें कि वे जन्मे थे।"

महारानी उन दिनों 'विंडसर प्रासाद' में थीं। उन्हें समाचार मिला कि सम्राट कुछ साधारण से अस्वस्थ हैं, पर चिंता जैसी कोई बात जरा भी नहीं है, तो भी महारानी का समाधान न हुआ। वे दौड़ती हुई पहुँची और देखा कि एडवर्ड बेहोश पड़े हैं। रानी को देखने के लिए उन्होंने आँखें खोलीं और प्राण त्याग दिए।

एडवर्ड की आत्मा का अस्तित्व मृत्यु के बाद भी अनुभव किया जाता रहा। उनकी एक अंतरंग मित्र थी—लेडी वारविक। कुछ दिन प्रेत विशारद 'एटा राइट' के माध्यम से वे लेडी वारविक पर अपना अस्तित्व प्रकट करते रहे। इसके बाद उन्होंने सीधा संपर्क स्थापित कर लिया। वे अक्सर अपनी प्रेयसी के पास आते और जर्मन भाषा में वारविक के साथ अपनी अतृप्त प्रणय आकांक्षाएँ व्यक्त करते।

'स्प्रिच्युअलिस्ट एलायन्स' में अभी भी एक ऐसी घड़ी ऐतिहासिक सुरक्षा के साथ रखी हुई, जो मरणोत्तर जीवन के अस्तित्व की मान्यता पर राज्य परिवार की स्वीकृति का प्रमाण देती है। यह घड़ी महारानी विक्टोरिया ने इस चक्र की सदस्या कुमारी जार्जियाना ईगल को, उनके प्रेत आह्वान की यथार्थता अनुभव करके भेंट में दी थी। कुमारी ईगल ने महारानी विक्टोरिया के सम्मुख प्रेतों के अस्तित्व और आह्वान की प्रमाणिकता के ऐसे अनेक सबूत पेश किए थे, जिनके कारण विक्टोरिया को इस तथ्य पर पूरी तरह विश्वास जम गया था, सन् १६०१ में महारानी

विक्टोरिया की भी मृत्यु हो गई। प्रेत आह्वान-संस्थान ने उनके साथ भी संपर्क बनाया। संस्थान की संचालिका एटा राइट ने एक दिन स्वर्गीय महारानी की आवाज प्रत्यक्ष सुनवाई, तो सभी सुनने वाले अवाक् रह गए।

महारानी विक्टोरिया का मरणोत्तर जीवन पर प्रगाढ़ विश्वास प्रख्यात है। वे १८१६ में जन्मीं। १८ वर्ष की आयु में सन् १८३७ में राजगद्दी पर बैंठीं। तीन वर्ष बाद १८४० में उनका विवाह हुआ और कुछ वर्ष बाद ही वे विधवा हो गईं। महारानी ने अपने स्वर्गीय पति प्रिंस अलवर्ट से संबंध स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर ली। इस कार्य में उन्हें आर० डी० लीज और जान ब्राउन नामक दो प्रेत विद्या-विशारदों से बड़ी सहायता मिली। स्वर्गीय अलवर्ट जीवन काल की तरह मरने के उपरांत भी महारानी को प्रत्येक कार्य में परामर्श और सहयोग प्रदान करते रहे। विधवा रहते हुए भी उन्हें सर्वथा एकाकीपन अनुभव न होने देने के लिए स्वर्गीय आत्मा उनके साथ घनिष्ट संबंध बनाए रही।

अलवर्ट अपनी सूक्ष्म सत्ता को स्थूल रूप से प्रकट करने के लिए डी. ब्राउन के शरीर का सहारा लेते थे। जो कहना होता वे उन्हीं के शरीर में प्रवेश करके कहते। महारानी मि० लीज के प्रति बहुत कृतज्ञ थीं, जिन्होंने ब्राउन के रूप में एक अधिकारी माध्यम लाकर उन्हें दिया था। प्रेतात्माएँ हर शरीर के माध्यम से अपना अस्तित्व प्रकट नहीं कर सकतीं। उसके लिए उन्हें अधिकारी व्यक्ति चाहिए। इसके लिए मि. ब्राउन सर्वथा उपयुक्त प्रमाणित हुए। लीज द्वारा उपयुक्त माध्यम की व्यवस्था की थी। सो इस सहायता के बदले में उच्च राज्य पद देने का प्रस्ताव कई बार किया पर लीज ने उसे सदा यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि—"आत्मिक जिम्मेदारियों का बोझ इतना अधिक होता है कि उसे वहन करते हुए लौकिक कार्यों को ठीक प्रकार नहीं किया जा सकता है। दोनों में से एक कार्य ही प्रमुख रह सकता है।" राज्य पद न लेने के इस

तर्क को महारानी ने उचित समझा और उनसे इसी स्तर का सहयोग लेती रहीं।

महारानी विक्टोरिया को अपने स्वर्गीय पति का सहयोग हर कार्य में अभीष्ट प्रतीत होता था, उनके परामर्श की उन्हें निरंतर आवश्यकता अनुभव होने लगी। परोक्ष संदेशों के अधूरेपन और संदेह की आशंका रहती थी। अस्तु ब्राउन के शरीर माध्यम से प्रत्यक्ष संदेशों के आदान-प्रदान की आवश्यकता अनुभव की गई। इसके लिए ब्राउन के शरीर और अलवर्ट की आत्मा का समन्वय ऐसा उपयुक्त सिद्ध हुआ कि महारानी के दुःखी जीवन में उपयुक्त सहारा मिल गया और वे इतने से भी बहुत हद तक अपने भार में हलकापन अनुभव करने लगीं।

ईश्वर की इच्छा प्रबल ठहरी, जॉन ब्राउन का भी स्वर्गवास हो गया। महारानी विक्टोरिया को इससे बड़ा आघात लगा, मानो उनका दाहिना हाथ ही टूट गया हो। जान ब्राउन की सुंदर-सी कब्र पर महारानी विक्टोरिया के यह उदगार लिखे हुए हैं—

"मुझ वियोगिनी और व्यथिता के लिए, वरदान स्वरूप एक विलक्षण व्यक्ति की स्मृति" महारानी ने उनके प्रति अपनी कथित भावनाएँ व्यक्त करते हुए 'स्वाभाविक साथी और विश्वस्त मित्र, के रूप में संबोधित करते हुए संवेदना व्यक्त की।

ब्राउन के स्वर्गवास से महारानी को आघात लगा। उसे व्यक्त करते हुए, उनके निजी सचिव सर हेनरी पौन सोनवी का एक वक्तव्य 'टाइम्स' पत्र में प्रकाशित हुआ। उन्होंने कहा—स्वर्गीय ब्राउन की सहायता महारानी को निरंतर रहती थी। उनके स्वर्गवास पर साम्राज्ञी को भारी पीड़ा हुई है। इस आघात से इन दिनों वे बहुत दुर्बल हो गई हैं।

जगद्विख्यात सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाता कीरो के पिता का जिस समय देहांत हुआ, उस समय उनकी शक्ति बहुत क्षीण हो गई थी और इसलिए वे कुछ आवश्यक बातें बताना चाहते हुए न बता सके और उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई। कुछ महीने कीरो

संयोगवश एक प्रेत आवाहन की बैठक में जा पहुँचे और वहाँ पिता की प्रेतात्मा ने आकर उनको बतलाया कि हमारे परिवार से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण दस्तावेज लंदन के 'डेविस एंड सन सालिसिटर' के यहाँ रखे हैं। उनका दफ्तर स्ट्रेंड में गिरजाघर के पास एक तंग सड़क पर है, जिसका नाम मैं भूल गया हूँ। तुम उनके यहाँ जाकर उन कागजातों को ले आना।"

"दूसरे दिन कीरो उस सड़क पर पहुँचे और बहुत देर परिश्रम करने के बाद वह कार्यालय मिल गया। उसके पुराने मालिक तो मर चुके थे, पर उस कार्यालय को किसी अन्य वकील ने खरीद लिया था। नये मालिक ने पहले तो इतने पुराने कागजात को जल्दी ढूँढ़ सकने में असमर्थता प्रकट की, पर जब कीरो ने उसके क्लर्क को पुरस्कार देने की बात कही तो उसने पुराने बंडलों में से आधा घंटा मेहनत करके, उन दस्तावेजों को निकाल दिया।"

शरीर में त्याग के बाद भी आत्माओं का अस्तित्व बना रहता है। यदि संपर्क का उपयुक्त माध्यम बन सके तो उनके साथ घनिष्ट संपर्क ही नहीं वरन् आशाजनक सहयोग भी प्राप्त किया जा सकता है। इस तथ्य की प्रामाणिकता में असंख्य उदाहरण उपलब्ध हैं। आवश्यकता उस विधि एवं उन तथ्यों को जानने की है। मृत्युपूर्व की आकांक्षाएँ स्वयं प्रेतों को इस संपर्क के लिए आकुल रखती हैं, उचित तालमेल बैठ जाने पर प्रेतात्मा तथा संबंधित व्यक्ति दोनों ही लाभान्वित होते हैं। दोनों की आकांक्षा तृप्त होती है।



भूत से डरें नहीं, वह तो बस भूत है

*

काल के अनंत प्रवाह में बह रही जीवनधारा का प्रेतयोनि एक नया मोड़ मात्र है। हमारे सीमित बोध जगत् के लिए भले ही वह जीवनधारा खो गई प्रतीत होती हो, पर वह सर्वदा अविच्छिन्न रहती है और हमारा संस्कार-क्षेत्र मरणोत्तर जीवन में भी सक्रिय रहता है, अंतःकरण चतुष्ट्य मृत्यु के उपरांत भी यथावत् बना रहता है। अशांत, विक्षुब्ध मनःस्थिति भी अपना स्वभाव उस रूप में ही बनाए रखती है। दुष्ट और दुरात्म जीवन-क्रम की यह स्वाभाविक परिणति जीवात्मा को जिस अशांत दशा में रहने को बाध्य करती है, उसका ही नाम प्रेत दशा है। अपनी दुर्दशा से सामान्यतः प्रेतों को दुःख ही होता है, पर अत्यंत कलुषित, अनाचारी व्यक्तियों की हिंस्र मनोवृत्तियाँ प्रेत जीवन पाकर भी अपनी क्रूर आकांक्षाओं की पूर्ति करना चाहती हैं और लोगों को अनायास सताती रहती हैं, पर अपना आतंक वे उन्हीं पर जमा पाती हैं, जिनका आत्मबल अविकसित हो।

प्यार का अभाव, असुरक्षा की आशंका, मूर्खतापूर्ण कठोरता से भरा नियंत्रण, आत्यंतिक चिंता, कुसंग से उत्पन्न विकृतियाँ व्यक्ति के विकासक्रम को जब बालकपन से ही तोड़-मरोड़ देती हैं, तो आत्मबल का सम्यक् विकास नहीं हो पाता। ऐसी विघटित मनःस्थिति ही प्रेतात्माओं को अपना उपयुक्त क्रीड़ा-क्षेत्र लगा करती हैं। प्रेतात्माएँ उसे अपना क्रीड़ा-क्षेत्र न भी बनाएँ तो क्या, मनोविकृतियों का झुंड एकत्र होकर मानसिक रोगों का रूप ले लेता है या अन्य प्रकार से उन्मत्त आचरण के लिए प्रेरित व बाध्य करता है। उत्कृष्ट लक्ष्यों के लिए साहस, उल्लास और स्फूर्ति से भरपूर मनःस्थिति, जहाँ मनुष्य की सामर्थ्य को अधिकाधिक विकसित एवं ऊर्ध्वगामी बनाते हुए, उसे महामानवों-देवमानवों की कोटि में पहुँचा देती है, वही दुर्बल दूषित मनःस्थिति जीवन भर हताशा, आक्रोश

और आत्मग्लानि के नरक में तो जलाती ही है, मरणोत्तर जीवन में भी अंतश्चेतना की अविच्छिन्नता के कारण उसी स्तर की गतिविधियों का क्रम चलते रहने से प्राणी को क्षण भर भी चैन नहीं लेने देतीं। लेकिन इससे भी महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये अशांत आत्माएँ या मनोदशाएँ उन्हीं लोगों पर अपना त्रासपूर्ण प्रभाव डालने सकने में समर्थ हो पाती है, जिनकी स्वयं की मनःस्थिति दुर्बल विशृंखल हो।

सर्वप्रथम तो, भूत-बाधा के यथार्थ होते हुए भी यह तथ्य निरंतर स्मरणीय है कि भूत-बाधाओं के किस्से कहानियों में लगभग तीन चौथाई तो निस्सार गप्पें होती हैं। शेष एक चौथाई में भी अधिकांश भ्रांति और अज्ञानता के आवरण में लिपटी होती है। अंधविश्वासी शंकालु लोग वास्तविक शारीरिक-मानसिक रोगों को भी भूत-बाधा मान बैठते हैं और उचित उपचार न कराकर इधर-उधर भटकते रहते हैं तथा सब कुछ गवां बैठते हैं।

● शंका डायन-मनसा भूत

संशय को स्वीकार कर लेने पर मस्तिष्क का पहिया उन्हीं आशंकाओं के समर्थन में चलने लगता है और चित्र-विचित्र कल्पनाएँ अवास्तविक को भी तथ्य जैसा मानने लगती हैं।

शंका डायन-मनसा भूत की उक्ति अक्षरशः सत्य है। किसी और निर्दोष महिला पर अपनी कुशंकाओं का आरोपण करके, उसे डाकिन, चुड़ैल, जादूगरनी आदि के रूप में भयानक देखा जा सकता है। डायनों का अस्तित्व पूर्णतया संदिग्ध है, किंतु कुशंकाओं के खेत में असंख्यों एक से एक भयानक डाकिनों का उत्पादन निरंतर होता रहा है। आश्चर्य इस बात का है कि मनगढ़ंत डाकिनें हानि उतनी ही पहुँचा देती हैं, जितनी कि कोई वास्तविक डायन रही होती और उसने पूरे जोर-शोर से आक्रमण किया होता।

"मनसा भूत" की उक्ति में संकेत है कि मन से भूत उत्पन्न होते हैं। पीपल के पेड़ पर, मरघट में, खंडहरों में भूत-पलीतों के

किले बने होने और वहाँ से उनके तीर चलते रहने की मान्यता असंख्यों अंधविश्वासों के मनों में जड़ें जमाए बैठी रहती हैं। सभी जानते हैं कि जड़ों में दौड़ने वाला रस पत्र, पल्लव, पुष्प, फल आदि के रूप में विकसित होता रहता है। आशंकाजन्य भय, भीरुता की जड़ें यदि अचेतन मन में घुस पड़ें तो उतने भर से भूतों की अपनी अनोखी दुनिया बन पड़ेगी और उस सेना के आक्रमण की अनुभूति घिग्घी बँधा देने वाला त्रास देती रहेगी। यह स्वनिर्मित भूत भी उतने ही डरावने और हानिकारक होते हैं, जितने कि यदि वास्तविक भूत कहीं रहे होते और उनके द्वारा आक्रमण किये जाने पर कष्ट सहना पड़ता।

हिस्टीरिया का एक प्रकार है, 'सामयिक उन्माद', इसे भूत, पलीत या देवी-देवताओं के आवेश के रूप में देखा जा सकता है। शिक्षितों में यह आवेश दूसरी कई तरह की सामयिक उमंगों के रूप में आता है और वे अपने आपको क्रोध आदि आवेशों से ग्रसित पाते हैं। कई बार तो ऐसी स्थिति अपने लिए तथा संपर्क में आने वाले व्यक्तियों के लिए घातक बन जाती हैं। आवेशग्रस्त स्थिति के साथ रोगी जब भूत-प्रेतों के या देवी-देवताओं के आक्रमण के साथ संगति बिठा लेता है, तब वह प्रवाह उसी दिशा में बहने लगता है और ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं, जिनमें ऐसा प्रतीत होता है, मानो सचमुच ही कोई भूत-बेताल उन पर चढ़ दौड़ा हो।

ऐंक्जाइटी न्यूरोसिस' एवं हिस्टरिक न्यूरोसिस को हिस्टीरिया तो नहीं कहा जा सकता, पर उसकी 'सहेली' या 'छाया' कहने में हर्ज नहीं है। कोई कल्पना जब मस्तिष्क पर असाधारण रूप से हावी हो जाती है, तो उसे अनुभूतियाँ भी उसी प्रकार की होने लगती हैं। भूत-प्रेतों के आवेश प्रायः इसी स्थिति में आते हैं। मस्तिष्क में असंतुलन का दौरा पड़ता है। रोगी के मस्तिष्क का एक बहुत छोटा अंश यह अनुमान लगाने की चेष्टा करता है कि इस आकस्मिक हलचल का कारण क्या हो सकता है ? उसे दूसरे लोगों पर भूतों का आवेश आने की जानकारी देखने या सुनने से

पहले ही मिल चुकी होती है। अस्तु क्षण भर में अपनी स्थिति उसी प्रकार की मान लेने का विश्वास जम जाता है। बस, इतनी भर मान्यता शरीर के हिलने, झूमने, गरदन डुलाने, लंबी साँसें, उत्तेजना आदि भूतोन्माद के लक्षण प्रस्तुत कर देती है।

इस श्रेणी में देवी-देवताओं के आवेशों की गणना की जा सकती है। भूतोन्माद अधिक अविकसित, अशिक्षित और असंस्कृत लोगों को आते हैं, उनमें भय, आक्रोश का बाहुल्य रहता है और हरकतों में तथा वचनों में निम्न स्तर की स्थिति टपकती है। जब कि देवोन्माद में अपेक्षाकृत सज्जनता एवं शिष्टता की मात्रा अधिक रहती है। आवेश एवं वार्तालाप भी ऐसा ही होता है, मानो कोई देव स्तर का व्यक्ति कर रहा हो। जिन लोगों ने देवी-देवताओं की चर्चा अधिक सुनी है, स्वयं उस पर विश्वास करते हैं, उनका मस्तिष्क आवेश की स्थिति में अपनी कल्पना, साथ ही हरकतें भी उसी स्तर की बना लेता है। वस्तुतः इन आवेशों में देव स्तर सिद्ध करने वाली कोई प्रामाणिकता नहीं होती। स्तर के अनुरूप इनका वर्गीकरण भूतोन्माद या देवोन्माद के रूप में किया जा सकता है, पर उनके बीच कोई बड़ा भेद नहीं होता।

आयुर्वेद ग्रंथों में भूतोन्माद की कितनी ही शाखा-प्रशाखाओं का वर्णन है। उसे रोग की संज्ञा दी गई है और उपचार विधि बताई गई है। वस्तुतः उसे उन्माद का यदा-कदा आने वाला दौरा ही कह सकते हैं। आवेश गहरा हो तो रोगी के अवयव ही उत्तेजित होते हैं और वह उन्मत्तों जैसी हरकतें करता है; किंतु यदि दौरा हलका हो तो एक प्रकार से नशे जैसी स्थिति बन जाती है। भूत का व्यक्तित्व अपने ऊपर थोपकर वह ऐसी ही बातें करता है, मानो वह सचमुच ही भूत की स्थिति में पहुँच गया हो। भूत को जो कहना चाहिए सो ही वह कह रहा हो। यह कथन क्रमबद्ध तो होता है, उसकी संगति बैठती है पर होता सर्वथा काल्पनिक है। भोले लोग उसे तथ्य मान बैठते हैं और उन्माद की स्थिति में कहा गया था, उसी पर विश्वास करके वैसा ही करने या मानने लगते हैं।

कई मनुष्यों को ऐसी आवाजें सुनाई पड़ती हैं मानो किसी ने उनसे कुछ बात जोर देकर कही है। लगता है उन्होंने वैसा सुना है। किसी-किसी को ऐसा लगता है कोई भीतर से बोल रहा है। पेट में बैठकर या सिर पर चढ़कर कुछ बता रहा है। इस बीमारी को 'हैवीफ्रेनिक शिजोफ्रेनिया' कहते हैं। भूत-पलीतों के, देवी-देवताओं के संदेश, आह्वान, आदेश प्रायः इसी प्रकार के होते हैं। प्रेमी और प्रेमिकाओं को इसी प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं, मानो उनका प्रिय पात्र सामने खड़ा कुछ इशारे कर रहा है या कह रहा है—जिनके प्रियजन जल्दी ही मरे हैं, उनका वियोग निरंतर छाया रहता, उन्हें भी झपकी आते ही मृतात्मा निकट आकर कुछ करती, कहती दिखाई पड़ती है। भक्त लोगों को उनके इष्ट देव भी ऐसे ही कौतूहलवर्धक परिचय देते हैं।

मानसिक अस्त-व्यस्तता को दो भागों में विभाजित किया जाता है—(१) न्यूरोसिस (२) साइकोसिस।

न्यूरोसिस वह स्थिति है, जिसमें मनुष्य अंट-संट सोचता और आँय-बाँय बोलता है। बेकार की चिंताएँ और बे-सिर-पैर की कल्पनाएँ उसे हैरान करती-रहती हैं। चिंता में डूबा, आशंकाओं से ग्रसित, भयभीत एवं असंभव चिंतन के घोड़े दौड़ाते हुए उसे आए दिन देखा जा सकता है। कभी कुछ-कभी कुछ खब्त सवार रहता है।

साइकोसिस इससे आगे की और अधिक बिगड़ी हुई स्थिति है। उसमें व्यक्ति पूर्ण रूप से तो नहीं पर किसी विशेष समय, परिस्थिति, घटना, वर्ग या व्यक्ति के संबंध में उसके कुछ ऐसे भले या बुरे आग्रह जम जाते हैं, जिनका वास्तविकता के साथ बहुत कम संबंध होता है। उसकी अपनी कल्पना और मान्यता एक अलग से स्वप्नलोक रच लेती है और उन्हीं में वह खोया रहता है।

भूत-बाधाओं के अनेक किस्से वस्तुतः मानसिक रोगियों के बारे में फैली भ्रांति का परिणाम होते हैं। उनका सही-सही उपचार करना चाहिए। अन्यथा रोग-पीड़ित स्वजनों से असमय ही बिछुड़ना पड़ जाता है और दोष भूतों का लगता है।

भूत-बाधाओं के वास्तविक स्वरूप को साधना चाहिए। साथ भी यह तथ्य ही हृदय में भली भाँति अंकित कर लेना चाहिए कि वास्तविक भूत-बाधाएँ भी दुर्बल चित्त लोगों के सामने ही उपस्थित होती हैं।

प्रेतात्माएँ हर किसी के संपर्क में नहीं आतीं। वे दुर्बल मनोभूमि के व्यक्तियों को चुनौती देती हैं और उन्हीं को अपना वाहन बनाती हैं। मनस्वी लोग सदा जागरूक रहते हैं। द्विजातीय तत्त्वों से लड़ने के लिए जिस प्रकार रक्त के श्वेत कण अपनी संघर्षशीलता का परिचय देते हैं, ठीक उसी प्रकार प्रतिभा और प्रखरता के धनी अपनी साहसिकता के बल पर प्रेतात्माओं को समीप नहीं आने देते, आती है, तो उन्हें धकेलकर दूर फेंक देते हैं। दुर्बल मनोभूमि के, अथवा प्रेतात्माओं में विशेष रुचि लेने वाले 'भूत भक्तों' को उनका वाहन बनते देखा गया है। जिनके सिर पर आए दिन भूत झूमते रहते हैं, उन्हें अँग्रेजी' में 'मीडियम' कहा जाता है। साधारणतया उन्हें प्रेत वाहन नाम दिया जाए तो अनुपयुक्त न होगा।

प्रेतात्मा प्रमाणित व्यक्ति के भीतर से एक सूक्ष्म पदार्थ-प्रवाह निकलता है, जिसे 'टेलीप्लाज्म' नाम दिया गया है। यह 'टेलीप्लाज्म' व्यक्ति-चित्त में विद्यमान उस अतीत के व्यक्ति-विशेष या वस्तु-विशेष (जिसे प्रेत कहते हैं) की छवि के संवेदनात्मक प्रतिबिंबों के अनुरूप आकार ग्रहण कर लेता है। यह माध्यम-व्यक्ति के शरीर से स्वयं को पृथक् कर सकता है और इस प्रकार प्रेत की प्रतिच्छाया या छवि स्पष्ट दिखाई दे सकती है।

डॉ० सी० डी० ब्रोड समेत अनेक वैज्ञानिक-मनोवैज्ञानिकों ने 'मीडियम' (प्रेत प्रभावित व्यक्ति) के बारे में एक अन्य सिद्धांत प्रस्तुत किया है। उनका कहना है कि मस्तिष्क की संरचना जटिल है। वह शरीर के सम्मिलित संयोग का उत्पादन है, जिनमें एक अभौतिक तत्त्व भी सम्मिलित है, जिसे वे 'साइकिक फैक्टर' कहते हैं। जब व्यक्ति मरता है, तो उसका शरीर रूपी यह संयोग बिखरकर नष्ट हो जाता है। इस प्रकार उस शरीर में अवस्थित मस्तिष्क का भी

अस्तित्व समाप्त हो जाता है। किंतु "साइकिक फैक्टर" कोई भौतिक द्रव्य (मैटर) नहीं है, अतः वह विनष्ट नहीं हो सकता। यह अवशिष्ट 'साइकिक फैक्टर' इधर-उधर भ्रमण करता रहता है। फिर ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क को पाते ही वह प्रविष्ट हो ज़ाता है, जो इन परिव्राजक 'साइकिक फैक्टर्स' के प्रति ग्रहणशील हो। ऐसा ही व्यक्ति 'मीडियम' प्रेत वाहन बना करते हैं। 'साइकिक फैक्टर' कोई व्यक्ति तो होते नहीं, वे पूरे मस्तिष्क के भी प्रतिनिधि नहीं होते। अपितु मस्तिष्क का 'पदार्थ से परे अंश विशेष' होते हैं। अतः 'साइकिक फैक्टर' एक पूर्ण मस्तिष्क की तरह काम नहीं कर सकते।

प्रेतात्मा के नाम पर घटित होने वाली अगणित घटनाओं में से प्रायः आधी ऐसी होती हैं, जिन्हें आवेशग्रस्त मस्तिष्कीय रोग की संज्ञा दी जा सकती है। उन्माद के, स्नायु दुर्बलता के, भीरुताजन्य, आत्म-हीनता के दबे असंतोष की प्रतिक्रिया के कितने ही कारण ऐसे होते हैं, जिनसे मनुष्यों की मानसिक स्थिति गड़बड़ा जाती है। उस स्थिति में शरीरगत और मनोगत तनाव बढ़ता है। वह एक प्रकार के कंपन, रोमांच, ज्वर एवं आवेश जैसा होता है। ऐसा विचित्र रोग पहले अनुभव में नहीं आया था। अस्तु उसकी सीधी तुक प्रेत आक्रमण से लगा ली जाती है। रोगी के मन में यही मान्यता दृढ़ होती है और दर्शकों, संबंधियों में से अधिकांश प्रेत उपचार के सरंजाम इकट्ठे करके, रोगी की भ्रमग्रस्तता को पूरी तरह परिपुष्ट कर देते हैं। आमतौर से प्रेत आक्रमण इसी स्तर के होते हैं।

संस्कार-जगत् में प्रेतात्माओं का आतंक अंकित रहा, तो आवेशग्रस्त, रुग्ण व्यक्ति अपनी स्थिति की संगति भूत-प्रेतों, देवी-देवताओं के आक्रमण के साथ बैठाकर, उसी प्रवाह में स्वयं को बहाने लगता है। इससे ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं, मानो सचमुच ही कोई भूत-वेताल उस व्यक्ति को दबोच बैठा हो। वस्तुतः यह 'ऐंक्जाइटी न्यूरोसिस' तथा 'हिस्टरिक न्यूरोसिस' की स्थिति होती

है। 'हैवीफ्रेनिया' की स्थिति भी ऐसी ही रुग्ण मनोदशा का परिणाम है। अपने इष्ट देवों का 'दर्शन' करने वाले अनेक भक्त जन भी इसी मनःस्थिति में विभिन्न कौतूहलपूर्वक दृश्य देखा करते हैं। जिनके प्रियजन हाल ही में और असमय में मरे हों, उन्हें भी झपकी आते ही मृतात्मा आकर बात करती दिखाई पड़ती है। ये सब मानसिक अस्त-व्यस्तता के ही परिणाम। सुनिश्चित-सुनियोजित महत्त्वाकांक्षाएँ व्यक्तित्व को ओजस्वी, गतिशील, प्रखर और प्रभावी बनाती हैं, तो आकाश-कुसुमवत् आकांक्षाओं का अनपेक्षित विस्तार व्यक्तित्व को विभाजित कर देता है। विभाजित व्यक्तित्व मानसिक रोगों का सुरक्षित घर बनता जाता है। व्यक्तित्व का यह विभाजन अनेक बार प्रेत-बाधाओं के रूप में भी सामने आता है। जब आकांक्षाएँ शक्ति से सर्वथा विलग और विसंगत हो जाती है, तब से स्वाभाविक न रहकर अस्वाभाविक हो जाती है, उनकी पूर्ति संभव न होने से उनका दमन करना पड़ता है। दमित आकांक्षाएँ पाप-पिशाच का रूप लेती जाती हैं। वे विकृत और वीभत्स रूप में त्रास एवं दंड देती हैं।

भूत-बाधाएँ दो तरह से व्यक्ति को अपनी चपेट में लेती हैं—एक प्रकार की बाधा में रोगी के सिर पर भूत 'आता' है, वह अनर्गल प्रलाप और असंगत चेष्टाएँ करता है। रोग की इस स्थिति में रोगी की सामान्य चेतना विश्रृंखलित हो जाती है और यह विश्रृंखलित चेतना ही उसके व्यक्तित्व को घेरे रहती है।

दूसरे प्रकार की बाधा में 'भूत' रोगी के शरीर में भीतर समा जाता है। वह निरंतर 'व्यग्र-त्रस्त' विक्षिप्त-सा रहने लगता है। कभी-कभी अंग विशेष में पीड़ा भी होती है तथा यह पीड़ा अपना स्थान बदलती रहती है। ऐसे रोगों का शारीरिक कारण ढूँढ़ने पर भी मिल नहीं पाता।

भूत-बाधा-पीड़ित व्यक्ति को आकस्मिक रूप से असह्य वेदना का अनुभव होता है, कभी हाथ-पैर ठंडे हो जाते हैं, दाँत-बँध जाते हैं और इस तरह की अन्य शारीरिक प्रतिक्रियाएँ स्पष्ट दिखने लगती हैं।

ये सभी प्रभाव मन में बैठी भय और अपराध की ग्रंथियों के हैं। इसलिए इनकी चिकित्सा किसी भी औषधि द्वारा नहीं हो पाती।

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि में प्रेत बाधा के अधिकांश मामले 'हिस्टीरिया' रोग का ही दूसरा नाम होते हैं। ऐसे रोगियों का व्यक्तित्व विभाजित होता है तथा उनके माध्यम व्यक्तित्व के साथ ही उनमें एक विशेष व्यक्तित्व भी समाहित हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों का यह भी निष्कर्ष है कि मानसिक विभाजन की स्थिति संक्रामक होती है। इसलिए देखा यह गया है कि जब कोई भूत-पीड़ित स्त्री झूमने लगती है, तो उसके इर्द-गिर्द बैठी स्त्रियों के झुंड में से भी दस-पाँच स्त्रियाँ झूमने लगती हैं।

विभिन्न आकृतियों-प्रकृतियों वाले अनेकानेक मानसिक विक्षोभ वस्तुतः मानसिक असंतुलन के परिणाम हैं। इसके लिए आवश्यक है—परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने की सूझ-बूझ तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को और परिष्कृत दृष्टिकोण द्वारा ही यह संभव है।

प्रेत प्रभाव के दो कारणों की चर्चा ऊपर की जा चुकी है, एक मृतात्माओं की उद्विग्न एवं आक्रामक सत्ता। दूसरे मनोरोगों के संदर्भ में प्रेत कल्पना की प्रतिक्रिया। इन दो के अतिरिक्त एक तीसरा कारण और भी है किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों की निजी चेतना में ही ऐसे उभार उत्पन्न हो जाते हैं, जो भूतों की करतूत जैसे विलक्षण परिचय देने लगते हैं। यह व्यक्तित्व में विशिष्ट ऊर्जा का आकस्मिक उदय होना कहा जा सकता है। वही अपने समीपवर्ती क्षेत्र को प्रभावित करती है। इससे दर्शकों को लगता है, यहाँ कोई प्रेतात्मा विद्यमान है और अपने अस्तित्व का परिचय देने के लिए उलट-पुलट कर रही है।

इन तथ्यों को समझते हुए अपनी मनोभूमि की परिष्कृत एवं उत्कृष्ट बनाने की आवश्यकता है।

भूत जो सचमुच भी होते हैं, वे मात्र अपने अतीत की अनुगूंज होते हैं। अपनी वासना-तृष्णा एवं आकांक्षा की आग से वे

स्वयं ही जल रहे होते हैं। वे वस्तुतः अतीत की भूलों का फल भुगत रहे होते हैं और उनसे मुक्त होने के लिए छटपटा रहे होते हैं। अभ्यास, कुतूहल या संस्कारवश वे अपनी गतिविधियों का प्रदर्शन करने को उद्यत होते भी हैं, तो उसमें डरने जैसी क्या बात है ? वे तो दया के ही पात्र होते हैं और मुक्ति की कामना करते रहते हैं। जो अपने वर्तमान में जी रहा है, ऐसे मनुष्य को किसी के 'भूत' से डरना शोभा नहीं देता। वे बस 'भूत' ही तो हैं।

अतृप्त आकांक्षाओं का उद्वेग मरने के बाद भी प्राणी को चैन नहीं लेने देता और वह सूक्ष्म शरीरधारी होते हुए भी यह प्रयत्न करता है कि अपने असंतोष को दूर करने के लिए कोई उपाय, साधन एवं मार्ग प्राप्त करे। सांसारिक कृत्य या उपयोग शरीर द्वारा ही हो सकते हैं। मृत्यु के उपरांत शरीर रहता नहीं। ऐसी दशा में उस अतृप्त प्राणी की उद्विग्नता उसे कोई शरीर गढ़ने की प्रेरणा करती है। अपने साथ लिपटे हुए सूक्ष्म-साधनों से ही वह अपनी कुछ आकृति गढ़ पाता है, जो पूर्व जन्म के शरीर से मिलती-जुलती किंतु अनगढ़ होती है। अनगढ़ इसलिए कि भौतिक पदार्थों का अभीष्ट अनुदान प्राप्त कर लेना, मात्र उसकी अपनी इच्छा पर ही निर्भर नहीं रहता। उसके लिए प्रकृति का सहयोग और ईश्वरीय विधि-व्यवस्था का समर्थन भी चाहिए। तीनों तथ्य मिलने पर ही परिपूर्ण शरीर मिलता है। किंतु मृतक को एकाकी प्रयत्नों तक ही सीमित रहना पड़ता है, अस्तु वह एक अपनी छोटी सामर्थ्य के अनुसार अनगढ़ शरीर ही रच सकता है। वह इतना ही बन पाता है कि बहुत प्रयत्न करने पर थोड़े समय के लिए दृश्य बन सके और कुछ हरकतें कर सके अन्यथा अदृश्य स्थिति में ही अपना निर्वाह करता रहे।

'भूत' अपनी इच्छा पूर्ति के लिए किसी दूसरे के शरीर को भी माध्यम बना सकते हैं। उसके शरीर से अपनी वासनाओं की पूर्ति कर सकते हैं अथवा जो स्वयं करना चाहते थे, वह दूसरों के शरीर से करा सकते हैं। कुछ कहने या सुनने की इच्छा हो, तो वह भी अपने वशवर्ती व्यक्ति द्वारा किसी कदर पूरी करते देखे गए हैं।

इसके लिए उन्हें किसी को 'माध्यम' बनाना पड़ता है। हर व्यक्ति माध्यम नहीं बन सकता। उसके लिए दुर्बल मनःस्थिति का आदेश पालने के लिए उपयुक्त मनोभूमि का व्यक्ति होना चाहिए। प्रेतों के लिए सवारी का काम ऐसे ही लोग दे सकते हैं। मनस्वी लोगों की तीक्ष्ण इच्छा शक्ति उनका आधिपत्य स्वीकार नहीं करती।

भूतों के अस्तित्व से किसी को डरने की आवश्यकता नहीं है। वे भी मनुष्यों की तरह ही जीवनयापन करते हैं। मनुष्य धरती पर स्थूल शरीर समेत रहते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से उनकी सामर्थ्य और साधन, जीवित मनुष्यों की तुलना में कम होते हैं, इसलिए वे डराने के अतिरिक्त और कोई बड़ी हानि नहीं पहुँचा सकते। डर के कारण कई बार घबराहट, चिंता, असंतुलन जैसी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। भूतोन्माद में यह भीरुता और मानसिक दुर्बलता ही रोग बनकर सामने आती है। वे जिससे कुछ अपेक्षा करते हैं, उनसे संपर्क बनाते हैं और अपनी अतृप्तिजन्य उद्विग्नता के समाधान में सहायता चाहते हैं। संपर्क समय का अनभ्यस्त अजूबापन ही प्रायः डर जाने का मुख्य कारण होता है।

भूत मनुष्य से कम समर्थ और कम साधन-संपन्न होते हैं। बशर्ते, मनुष्य ने आत्म-विकास किया हो। दबे, अविकसित, अपरिष्कृत मनुष्य ही भूतों के प्रकोप और आतंक के शिकार बनते हैं। भूत तो अपने ही उन्माद से त्रस्त, आत्म प्रताड़ित प्राणी होते हैं। वे उस त्रास का, आत्मप्रताड़ना का परिचय भर ही दे सकते हैं। उनसे डरकर स्वयं भी भूतोन्माद ग्रस्त हो जाने वाले व्यक्ति की दयनीय दुर्बलता मनुष्य की गरिमा के अनुरूप नहीं। भूत आत्म-सत्ता की अविनाशिता के प्रमाण भर हैं। उस प्रमाण से मनुष्य को भयभीत होने की भला क्या आवश्यकता ? उल्टे, यह प्रमाण तो शक्ति ही देता है। जब जीवन अनंत है और चेतना अविनाशी, तो उसका भूत क्या बिगाड़ेगा ? उसे तो आत्म-सत्ता की सनातन विद्यमानता का संदेशवाहक भर समझना चाहिए।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा